



# निर्माण IAS



**Section- A & B**

# QIP - BASIC CONCEPT

**Unit-1**

By:

**Sunil 'Abhivyakti' Sir**

**ENQUIRY OFFICE ➤**

631 Ground Floor, Main Road, Mukherjee Nagar, Delhi-09

**HEAD OFFICE/CLASS ROOM ➤**

996 1st Floor, Mukherjee Nagar (Near Gandhi Vihar Bandh) Delhi-09

**PH.: 011-47058219, 9540676789, 9717767797**

Website : [www.nirmanias.com](http://www.nirmanias.com) | E-mail : [nirmanias07@gmail.com](mailto:nirmanias07@gmail.com)

You can also visit our digital platform-



## UNIT - I

SECTION  
(A)

नीतिशास्त्र तथा मानवीय सद्व्यवहार : मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सारहत्व, इसके निर्धारक और परिणाम : नीतिशास्त्र के आधार; निजी और सार्वजनिक सम्बन्धों में नीतिशास्त्र।

SECTION  
(B)

मानवीय मूल्य - महान नेताओं, सुधारकों और अशासकों के जीवन तथा उनके उपदेशों से शिक्षा; मूल्य विभ्वसेत करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका।

Question - 1 - नीतिशास्त्र की उत्पत्ति समझायें ?

Ans. - नीतिशास्त्र शब्द का अंग्रेजी पर्याप्त एथिक्स (Ethics) है। 'एथिक्स' शब्द की व्युत्पत्ति मूलानी भाषा के शब्द 'एथिका' से हुई है, जो उसी भाषा के शब्द 'एथोस' से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ होता है रीति-रिवाज। इसे नीतिविज्ञान (Science of morality) या (Moral Philosophy) भी कहा जाता है।

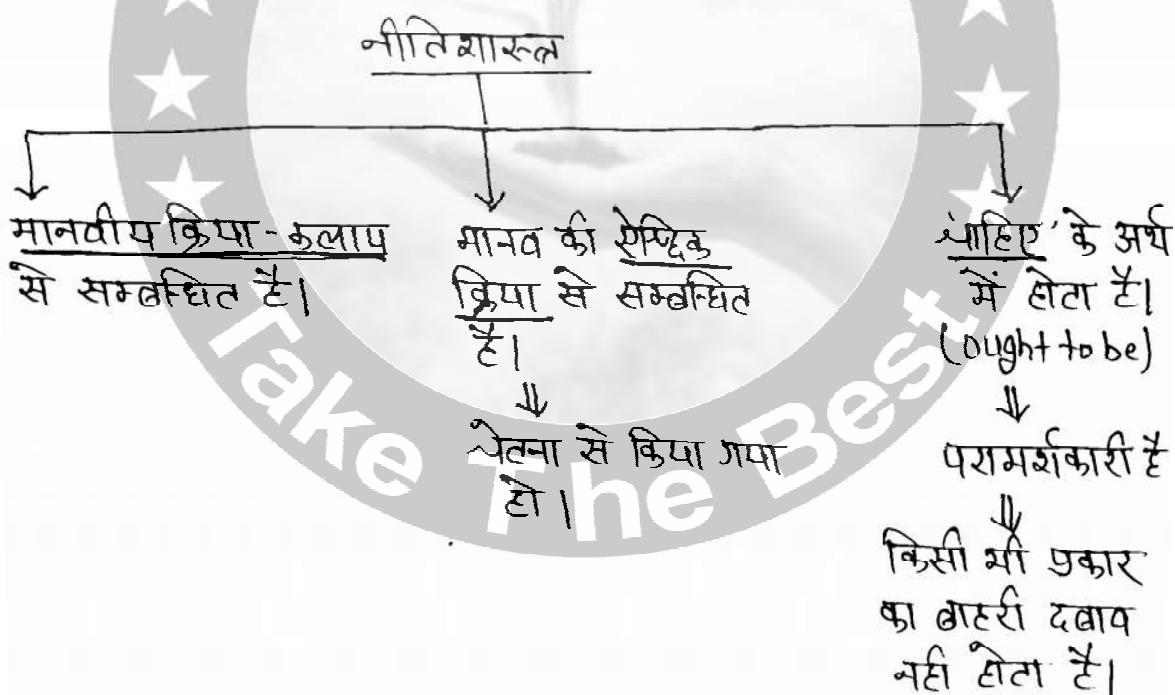
पहाँ 'MORAL' शब्द लैटिन भाषा के MOREH से निकलता है, जिसका अर्थ लैटिन भाषा में रीति-रिवाज की होता है।

इससे पह स्पष्ट होता है कि नीतिशास्त्र का उत्पत्ति रीति-रिवाज तथा परम्पराओं से धनिष्ठ सम्बन्ध होता है।

परन्तु आज नीतिशास्त्र अन्य अनेक विज्ञानों की मांति एक उन्नत विज्ञान का रूप ले चुका है जिसमें भनुष्य के कुछ विशेष गुणों (एण्डिक) पर सन्तुलित रूप व्यवस्थित ढंग से विचार करके उनके सम्बन्ध में विचार दिया जाता है।

Question-2 नीतिशास्त्र से आप क्या समझते हैं ?

Ans.- नीतिशास्त्र की परिभ्राषा देंते हुये कहा जा सकता है कि नीतिशास्त्र वह भानकीय व आदर्शगूल्य विज्ञान है जो सामाजिक धीर्घ समय से सम्बन्धित होने वाले सामाज्य भनुष्ठों के आन्वरण या ऐच्छिक कर्मों पर निष्पक्ष एवं प्रवक्षित रूप से विचार करके उनके सम्बन्ध में अपित-अनुपित अथवा शुभ-अशुभ का निर्णय देने के लिए भाष्यकारी प्रस्तुत करता है और इस निर्णय के आधार के लिए कुछ मूल सिफारिंगों अथवा भानकों या आदर्शों की स्थापना करता है।



## नीतिशास्त्र द्वारा मानवीय कर्मों का विवेचन खंड उसका आधार-

सामाजिक भनुष्य के कर्म दो छार के होते हैं ऐप्पिक्ट और अनैप्पिक। नीतिशास्त्र भनुष्य के उन्हीं कर्मों के गुण-अकार्यों या शुभ-अशुभ पर विचार करता है, जिसे भनुष्य पूर्णतया समेतन अवस्था में और जिसे किसी वास्तविक दबाव के बरता है।

भनुष्य के ऐप्पिक्ट कर्म के दो रूप होते हैं - पृथग् समेतन कर्म, इतीय अव्यासाजन्य कर्म।

समेतन कर्म का उदाहरण, एक विधार्थी द्वारा किटाब का अद्यापन करना। यह उसकी अपनी इच्छा पर निर्भर करता है कि यह किटाब पढ़े या न पढ़े तथा विपक्ष काल में इसी की सहायता करना (यह भी व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है)।

इसी तरह भनुष्य खल छुद कर्मों को लगातार करता जाता है तो उसकी आदत बन जाती है। उसे ही हम अव्यासाजन्य कर्म कहते हैं उदाहरण के लिए वसाहती, पौरी रूप संखुसी।

परन्तु सामाजिक शारी होने के कारण विभिन्न भनुष्यों की इच्छाओं, आकांक्षाओं, अद्वेष्यों रखे स्वार्थों में अद्य या विरोध की स्थिति बन जाती है जिससे संघर्ष की छिह्नी उत्पन्न हो जाती है। फलतः वाक्षित रूप सामजिक्यपूर्ण जीवन कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में नीतिशास्त्र अपने मूल सिद्धान्तों रखे जादर्शों के द्वारा भौतिक नियम की स्थापना करता है जिसपर भलकर समाज में सामजिक्य और सोहार्द की स्थापना होती है।

Question- मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र के सारहत्व से आप क्या समझते हैं?

### मानवीय क्रियाकलाप में नीतिशास्त्र के सारहत्व

अपरिहार्य / प्राचीनिक / आवश्यक सारहत्व

- ① नीतिक प्रेरणा
- ② व्यक्तित्व
- ③ पिरेन्ट
- ④ प्रिल्प
- ⑤ संबल्प स्वातंत्र्य
- ⑥ सामृद्ध
- ⑦ जान एंव उद्देश्य

सामान्य पा गोण सारहत्व

- काष्ट के अनुसार
- ① आत्मा की अमरता
- ② ईश्वर का अस्तित्व

मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र के सारहत्व से गार्हिय मनुष्य के सभ्यता अवस्था में किये गये उन ऐपिक छमों से है मिसके सन्दर्भ में नीतिशास्त्र उपरि-अनुपरि, सत्-असत् तथा शुश्र-अशुश्र छा निर्णय देता है, साथ ही इन निर्णयों के आधार या आनंदण के औपित्य एंव अनोपित्य की विद्यमान छी करता है। इन्हे नीतिशास्त्र की पूर्व मान्यताएं पा सारहत्व भी कहा जाता है।

नीतिकता की मान्यताएं वस्तुतः वे सत्य हैं, जिनसे मनुष्य जीते हैं। यदि ऐसा न हो तो मनुष्य का जीवा भुइ़किल हो जाये।

### ① अपरिहार्य / आवश्यक सारहत्व -

(i) नीतिक प्रेरणा -

मनुष्य के समक्ष अनेक घटिल परिस्थितियाँ

जाती हैं, परिस्थिति की जटिलता के उत्पन्न होने पर मनुष्य की बुद्धि ले काम नहीं करती छिन्न उसकी अन्तर्ज्ञातमा अवश्य ही जाग्रत रहती है इसी का नाम भैतिक घेटना है।

इसी भैतिक घेटना के साहरे से हम उपर्युक्त निर्णय ले पाते हैं और भैतिक परिस्थिति का सामना कर पाते हैं।

#### (ii) प्रक्रित्व-

नीतिशास्त्र के अनुसार नीतिका खंड भैतिक जीवन का केंद्र विन्दु प्रक्रित्व है। प्रक्रित्व के अन्तर्गत आत्मजीवन का भाव, आत्मनियन्त्रण, आत्मघेटन और आत्म अनुशासन का भाव रहता है।

#### (iii) विवेक-

मनुष्य एक विवेकशील जानी है। यह मनुष्य का वह विशेष गुण है जिसके आधार पर वह किसी कर्म को करने का निर्णय करता है। स्वशावतः विवेकशील होने के कारण ही मनुष्य के कर्मों का शूल्यांकन उपर्युक्त-अनुचित, शुभ-अशुभ, अच्छा-बुरा के रूप में किया जाता है।

#### (iv) विकल्प-

विकल्प भैतिक परिस्थिति का एक रूप है। भैतिक परिस्थिति उसी समय उत्पन्न हो सकती है जब हमारे सामने कम से कम दो या तीन लगभग समान हतर के मटल वाली उपस्थित हो। इन विकल्पों का हम भैतिक शूल्यांकन करते हैं और सर्वाधिक भैतिक मूल्य वाले विकल्प के पक्ष में अपना भैतिक निर्णय देते हैं।

#### (v) संकल्प स्वांत्रय-

हिना किसी वास्तव छलोभन या धबाव के अपनी इच्छानुसार किसी कार्य को जरूर या न जरूर की रूपतान्त्रिता ही संकल्प की रूपतान्त्रिता है।

संकल्पों की स्थतन्त्रता को नीतिशास्त्र में छः महत्व दिया गया है क्योंकि पट भैतिकता के निर्धारण में अत्यन्त महत्वपूर्ण शुभिका निभाता है।

(vi) सामर्थ्य-

भैतिकता के अपरिहार्य सारतत्व में सामर्थ्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सामर्थ्य से तात्पर्य मनुष्य द्वारा किये जाने वाले उन कर्मों से है जिन्हे करने की उनमें शारिरिक रूप बौद्धिक समता हो।

(vii) ज्ञान रूप उद्देश्य-

मनुष्य के केवल उन्हीं कर्मों का नीतिशास्त्र मूल्यांकन करता है जिन्हे पट मनुष्य जानता है रूप उसके उद्देश्य को समझता है। उदाहरण के लिए - इश्वर के सामने अपानकु कोई वाटन आने पर इश्वर द्वारा एक व्रेक लगाने से यहि किसी जो कोई पोट पहुँचती है तो इसमें इश्वर को भैतिक रूप से दोषी नहीं ठहराया जा सकता।

गौण सारतत्व-

(i) आत्मा की अमरता-

यदि सदाचारी कष्ट जील रहे हैं, तो यह कष्ट उनके सुर्वाष्टम के कर्मों का फल है और यदि उनके शुभकर्मों का फल इस जीवन में नहीं आया तो निश्चय ही आगे जीवन में उन्हें इसका फल मिलेगा। इसे ही आत्मा की अमरता कहते हैं।

(ii) ईश्वर का अस्तित्व-

ईश्वर के अस्तित्व की समझा मूलतः तत्त्वशास्त्र की है किन्तु काण्ट इसे भैतिकता की आवश्यक मान्यता के रूप में ग्रहण करते हैं। काण्ट एक सैर्वा सर्वशक्तिमान सत्ता को आवश्यक मानते हैं, जो सद्गुण और सुख में, तथा दुर्गुण और दुर्य में सामजिक स्थापित कर सके। यही सत्ता ईश्वर है।

Question: नेतिकृत के निर्धारण आधारों पर यथा जरूर होये उनकी विशेषताएं छाड़ये ?

Ans. नेतिकृत के निर्धारण -

- ✓ नेतिकृत निर्णय का विषय ऐपिक कर्म होते हैं। अब इन यह उठता है कि नेतिकृत निर्णय कर्मों पर दिया जाय अथवा कर्ता पर। कर्म तो एक निर्णीति किया है जिसे मनुष्य अपने उद्देश्यों की मूर्ति के लिए स्वेच्छा से करता है अतः कर्मों के साथ-साथ भी नेतिकृत निर्णय का विषय हो जाता है।
- ✓ यह बात अनुभव सिङ्ग है कि जैसा कर्ता का परिन दोगा वैसा ही उसका आपरण और कर्म होगा। देशभ्रम्म, देश-द्वीपी कार्य नहीं कर सकता। पुजारी, मूर्ति का अनादर नहीं कर सकता। कर्म का सम्बन्ध तुरन्त ही कर्ता के साथ जुड़ जाता है। इसलिए कर्ता का परिन नेतिकृत निर्णय का विषय बन जाता है।
- ✓ भौतिकशास्त्र के आधार पर यह घम किसी के परिन का अध्ययन करते हैं तो घम देखते हैं कि आनसिक उद्देश्यों के अध्ययन के साथ-साथ हमें उनकी इच्छाओं, धैरणाओं, उद्देश्यों और संकल्पों आदि का भी अध्ययन करना पड़ता है, इस त्रिकार घम परा पलता है कि कर्म और कर्ता के साथ-साथ उसमें आन्तरिक संकल्पों ने भी नेतिकृत निर्णय का विषय भाना जाता है। ऐसे उदाहरण कम नहीं हैं कि जटां यि एक बहुत ही सदापारी वास्त्रि जोहन्य जप्ताध कर बैठता है और एक जातातायी पराकाष्ठा की द्यालुता का परिप्रय देता है।
- ✓ मूल इच्छाओं को नेतिकृत निर्णय ले खेल से परे नहीं किया जा सकता। इच्छाओं के संघर्ष के फलस्वरूप ही किसी

संकल्प का उद्यम होता है। इच्छा, संकल्प और परिवर्तन ये तीनों ही परस्पर अन्तर्सम्बन्ध होते हैं। परिवर्तन के अनुसार इच्छाएं अपन्ने होती हैं और इच्छाओं के अनुसार संकल्प। अतः किसी क्रम या उसके कर्ता के विषय में भौतिक निर्णय देते समय उसकी मानसिक प्रवृत्तियों और मूल इच्छाओं पर व्यापक ध्यान दर्शन करना पड़ता है।

प्रेरणा के साथ-साथ अधिष्ठाप या उद्देश्य भी कभी महत्वपूर्ण नहीं है। प्रेरणा के फलस्वरूप हम किसी उद्देश्य को जाप्त करने के लिए अधिष्ठेत्रित होते हैं जिन्हें अधिष्ठाप की स्थिति में पहुँचकर हम उस साध्य की प्राप्ति के साथ-2 उनके साधनों पर भी ध्यान देते हैं। प्रेरणा में साधन का ध्यान नहीं होता जिन्हें अधिष्ठाप में साधन और साध्य दोनों पर भी ध्यान दिया जाता है।

**NOTE-** नेतृत्व के निर्धारक- नेतृत्व सम्पद्य, साधन और साध्य का सम्बन्ध, देश, काल एवं परिस्थिति, मानव और जलव्याघ आदि

**Question.** साध्य और साधन के मध्य सम्बन्धों पर व्यापक क्षिणिति की विषय साध्य परिणामों को उपर्युक्त स्थिति करते हैं या साधन?

**Ans.** जिस कार्य को करने का हम संकल्प करते हैं या जिस उद्देश्य को जाप्त करने का हम संकल्प करते हैं, वही हमारा 'साध्य' होता है।

उदारण के लिए- शूरु लोगों पर जब हम खाना खाने का संकल्प करते हैं तब यह घोषणा हमारा साध्य होता है। इसी प्रकार से हम जिस भी चीज़ को जाप्त करना चाहते हैं वही हमारा साध्य है।

साध्य को प्राप्त करने के लिए साधन की आवश्यकता पड़ती है। श्रोप्यन ऊर्जे का संकल्प मात्र कर बैठे से श्रोप्यन के में नहीं पहुंच पाता उसके लिए हमें उपास करना पड़ता है। श्रोप्यन की खामाग्री को उपार्जित करने की किंपा ही साधन है।

### साध्य और साधन का सम्बन्ध

साध्य और साधन में यहीं सम्बन्ध है जो दीपक और उकाश में, जिना दीपक के उकाश नहीं हो सकता और विना उकाश के दीपक की छलपना ही निरर्थक है। उसी उकार विना साधन के साध्य की इंद्रि वर्त्ता असम्भव है और साध्य के विना साधनों का कोई भवय नहीं है। वस्तु ये दोनों ही एक-दूसरे के पूरक तत्त्व हैं।

गांधी जी ने हिन्दू द्यराज में साधन और साध्य के सम्बन्ध में वर्णन करते हुए लिखा है, "साधन वीज है और साध्य फूल है।"

ताप्ति है कि जैसा वीज होगा वैसा ही उत्तम या निकृष्ट फूल होगा। सरसों के तेल का दीपक उत्तम उकाश नहीं दे सकता जितना कि यिष्ठली ना बल्कि देता है। साधन जितना ही अस्या होगा उत्तम ही सरल साध्य की प्राप्ति होगी। गांधी जी ने केवल साध्य की पवित्रता को ही वाहनीय नहीं माना, अपितु साधन की पवित्रता को भी नितान्त अनिवार्य ठहरा है। क्या साध्य, साधन की उपर्युक्त छहराता है?

इस प्रश्न को लेकर विज्ञानी में बड़ा भत्तभेद रहा है। पुंजीवादी, साम्यवादी और उगतिवादी दियारकों का भत्त है कि साध्य की नैतिकता ही साधन के औपरिय की कसोटी है। किन्तु शान्तिवादी और अहिंसावादी दियारकों का यह भत्त है कि केवल साध्य की पवित्रता ही नहीं साधन की पवित्रता भी परम वाहनीय है।

## SECTION - B मानवीय मूल्य-

Question- मानवीय मूल्यों से क्या आशय है? क्या परिस्थितियों के दिसाव से मूल्यों में परिवर्तन होते हैं?

Ans. मानवीय मूल्य :-

मानवीय मूल्य मनुष्य के ये गुण हैं जो उसके विचार, विश्वास, आवरण तथा व्यवहार को निर्देशित रूप से नियंत्रित करते हैं तथा उसके आत्मविश्वास रूप आभोगति में सहायता होते हैं।

मूल्य सकारात्मक रूप से नकारात्मक दोनों होते हैं जिन मूल्यों से मनुष्य की इच्छा दृष्ट हो, जीवन पूढ़ि हो, आत्मोक्षणि हो वह सकारात्मक मूल्य है और जिन मूल्यों में इन तत्वों की अनुपस्थिति हो वह नकारात्मक मूल्य है।

सकारात्मक मूल्यों में उमिति कर्म, उदारता, निःस्वार्थ, व्याय, परिश्रम, नैतिकता होती है तो वही नकारात्मक मूल्यों में अनुपस्थिति कर्म, अनुदारता, स्पार्श, अन्याय, आलस्य एवं अनैतिकता के रूप पाये जाते हैं।

परिस्थितियों के दिसाव से मूल्यों में परिवर्तन :-

परिस्थिति के दिसाव से मूल्यों में परिवर्तन शीर्षों होते हैं। ऐसे- हृष्यक रुक्षना रूप भौति करना एक नकारात्मक मूल्य है लेकिन राष्ट्रीय और समाजिक में की जाने वाली हृष्य नकारात्मक मूल्यों में नहीं जिनी खाती हैं।

उदास्त्रण के लिए सैनिकों द्वारा सीमा पर जतिविधियों पर रोड लगाने के लिए की गयी हृष्य या राष्ट्रीय भुखाला को ध्यान में रखकर गोपनीय सूचनाओं का लक्षिकरण।

Question- मानवीय मूल्यों से क्या आशय है? मूल्यों की आवश्यकता के कारणों पर चर्चा कीजिए।

Ans. मानवीय मूल्यों से आशय? --

मूल्यों की आवश्यकता के कारण -

- ✓ सामाजिक हिंसा, संघर्ष, शेषशाव को दूर करने के लिए।
- ✓ राजनीति / प्रशासन में मूल्यों का ध्वनि करने के लिए
- ✓ आर्थिक मूल्यों का ध्वनि जैसे- लोभ कमाना ही इकमाल उद्देश्य जैसी भावना को बदलने के लिए।
- ✓ सांस्कृतिक मूल्यों का ध्वनि जैसी उत्त्वति खो द्वारा के लिए।
- ✓ संविधान के आदर्शों की छापि के लिए
- ✓ शूल अधिकारों के साथ कर्तव्य की भावना के विकास के लिए।
- ✓ विकास का लाभ हाशिए पर पड़े अन्तिम घट्टि तक पहुंचाने के लिए।
- ✓ सतह विकास के लक्ष्यों की छापि के लिए।

← {नेता, सुधारक, प्रशासक} →

Question- जीवन के नैतिक आपरण के सन्दर्भ में आपको डिस दिखाया गया व्यक्तिय ने सर्वाधिक ऐरणा दी है उसकी शिक्षाओं का सार उस्तुत कीजिए? विशिष्ट उदाहरण देते हुए वर्णन कीजिए कि आप अपने नैतिक विकास के लिए उन शिक्षाओं को किस प्रकार लागू कर पायें? (2014 - IAS) अच्छा

Question- आपके व्यक्तित्व को किस उदासक ने सर्वाधिक उभावित किया? उनकी ऐरणास्पद उदासीनीय गुणों को पर्दित करते हुए पह बतायें कि आप अपने जीवन में उसे किस उदास लागू कर पायें?

A18: प्रथम खण्ड- ऐतिक आपरण के सन्दर्भ में मुझे भैरणा देने वालों में विच्छात व्यक्तियों में शामिल है उशासक के रूप में- सम्राट् अशोक, ईश्वरन, रथा पा जवाहरलाल नेहरू इत्पादि, सुधारक के रूप में- राजा राम मोहन राय, एवाजी विवेकानन्द आदि तथा नेता के रूप में भट्टमा गांधी।

परन्तु इन सभी में मुझे 'X' के सर्वाधिक उच्चावित / छेरित किया।

### द्वितीय खण्ड-

#### सम्राट् अशोक

##### इनके विशेष गुण / शिक्षा

- 1- सर्वभावन और आदर्श विजेता पिता द्वारा उपराज्य को संरक्षित रखना और उसका विस्तार करना → मुझे प्राप्त भैरणा यिक्षा
- 2- धर्म साक्षण्युता एवं भद्रान धर्म परायण → साम्प्रदायिक रूप धाराओं द्वारा दर्शायी गई विविध धर्मों की संरक्षण की भैरणा मिली।
- 3- अच्छे शासन का प्रकाशन → साम्प्रदायिक रूप धाराओं द्वारा दर्शायी गई विविध धर्मों की संरक्षण की भैरणा मिली।
- 4- राष्ट्रीय रूपरता का नायक भनेखाद्धारण की भाषा पाली को अपमाया → एक अच्छी प्रशासकीय कार्य संरक्षिति, विविध सेवा की डिलिवरी की यिक्षा।
- 5- कुशल विदेश नीति- पड़ोसी देशों के साथ मिलकर सांस्कृतिक, धर्मवाद स्थापित किया → भन आकांक्षाओं का सम्मान करना
- मारत की विदेश नीति की प्रेशरिल धारणा में विश्वास की भैरणा।

Question. मूल्य विकसित करने में परिवार की श्रमिका को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ?

Ans.

परिवार व्यक्ति के मूल्यों को विकसित करने में भवत्वपूर्ण श्रमिका निश्चाते हैं इसलिए परिवार को मूल्यों के विकास का पालना करा जाता है।

रुडर्सन के अनुसार- वस्त्रों की शिक्षा उसके घर में ही आरम्भ होती है जब वह अन्य व्यक्तियों के कार्यों को देखता है तो उनका अनुकरण करता है और उनमें बाग लेता है तब वह अनोपचारिक रूप से शिक्षित होता है।

मूल्यों के विकास में परिवार की श्रमिका-

- ✓ शामाजिक गुणों का विकास
- ✓ मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की संतुष्टि
- ✓ आधरण की बुनियाद
- ✓ भागिकता के भावना का विकास
- ✓ परमार्थ की शिक्षा
- ✓ पीविकोपार्जन की शिक्षा

उदाहरण-

भारत में पिता धृतराष्ट्र की कुंग और भाभा शत्रुघ्नी की संगति ने सुधोधन को इर्याधन लेना दिया। वहाँ धुधिष्ठिर को खां अपनी तपस्विनी भाता, अपने दादा शीघ्रम की संगति छाति ढुपी और वह अपने धर्मानुपालन के कारण धर्मराष्ट्र धुधिष्ठिर करलायें।

Question. मूल्यों के विकास में स्कूल की श्रमिका का परीक्षण कीजिए ?

Ans.

- ✓ संख्यात्मक का संयोग संवेदन संवृद्धि - स्कूल विद्यार्थियों के समाज के सांस्कृतिक मूल्यों का संवेदन करता है।

- ✓ सामाजिक फुशलता का विकास - स्कूल, समाज के लिए वाहिनी के मन में उपर्युक्त आदर्शों की स्थापना करना है।
- ✓ उच्चतर मूल्यों का निर्माण - स्कूल, विद्यार्थियों में नैतिकता का विकास करता है ताकि सर्व-गत, उपर्युक्त-अनुपर्युक्त में अन्तर कर सके।
- ✓ धर्म के द्वितीय विद्यालय कार्यक्रम का निर्माण - औसत भवाना, राष्ट्रीय डिव्स भवाना, सामृद्धिक खेलों का सम्पोलन, शैक्षिक पर्यावरण इंवेन्ट्रालों का संगठन करना।
- ✓ स्कूल के पश्चात की जटिलियों को तैयार करना -
- ✓ व्यवसायिक छान्सिक्षण प्रदान करना।
- ✓ समाज सेवा में शाग देना।
- ✓ सामाजिक विषयों का शिक्षण।

Question- मूल्यों के विकास में समाज की भूमिका का निर्धारण कीजिए?

Ans. भविष्य एवं सामाजिक जागीरे इसलिए समाज का सम्बन्ध केवल लोगों के समूह के साथ नहीं बल्कि उनके द्वीप द्वारा वाले अन्तरसम्बन्धों से भी है। समाज के द्वारा मूल्यों के विकास में योगदान निम्न लिखित है-

- ✓ अच्छे स्कूलों की स्थापना करना
- ✓ अच्छे पुस्तकालयों की स्थापना करना
- ✓ साइपिक इंयं सास्कृतिक शिक्षा की व्यवस्था करना
- ✓ व्यवसायिक शिक्षा की व्यवस्था करना
- ✓ नैतिक, आध्यात्मिक य ऐष्ट घट्टों का विकास
- ✓ विभिन्न सामाजिक साधनों में गतिशील स्थापित करना
- ✓ समाज, समृद्धि, राष्ट्रीयता, धर्म में सांबंधस्य स्थापित करना
- ✓ बेट्टर य उच्चतर मूल्यों का विकास



# निर्मान IAS

## स्थानीय आदर्शता

# QIP - BASIC CONCEPT

**Unit- 2-5**

By:

**Sunil 'Abhivyakti' Sir**

**ENQUIRY OFFICE**

631 Ground Floor, Main Road, Mukherjee Nagar, Delhi-09

**HEAD OFFICE/CLASS ROOM**

996 1st Floor, Mukherjee Nagar (Near Gandhi Vihar Bandh) Delhi-09

**PH.: 011-47058219, 9540676789, 9717767797**

Website : [www.nirmanias.com](http://www.nirmanias.com) | E-mail : [nirmanias07@gmail.com](mailto:nirmanias07@gmail.com)

You can also visit our digital platform-



## UNIT - 2

**अभिवृति :** सारांश (कंटेन्ट), संख्यना, पृष्ठि; कियार तथा आयरण के परिप्रेक्ष्य में इसका प्रभाव एवं सम्बन्ध; भौतिक और राजनीतिक अभिवृति; सामाजिक प्रभाव और धारणा।

**Question-** अभिवृति का सारांश से क्या गत्पर्य है?

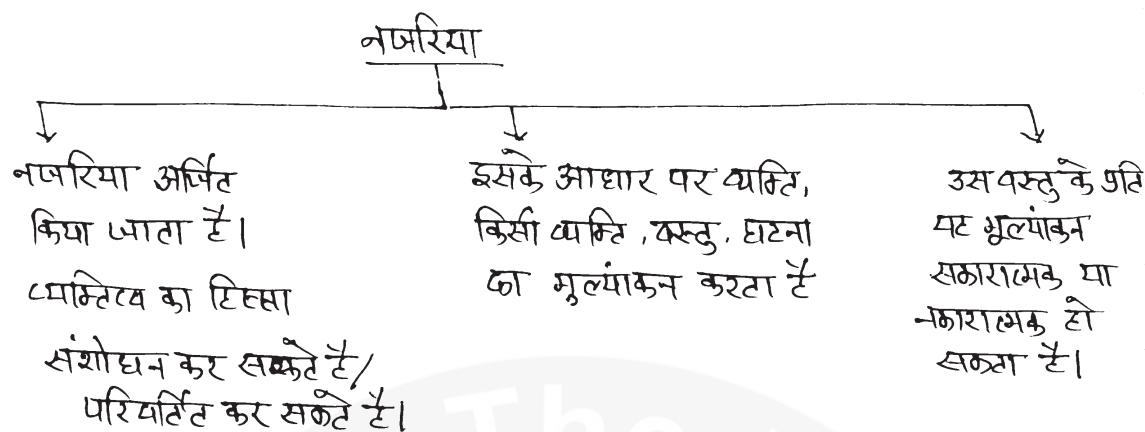
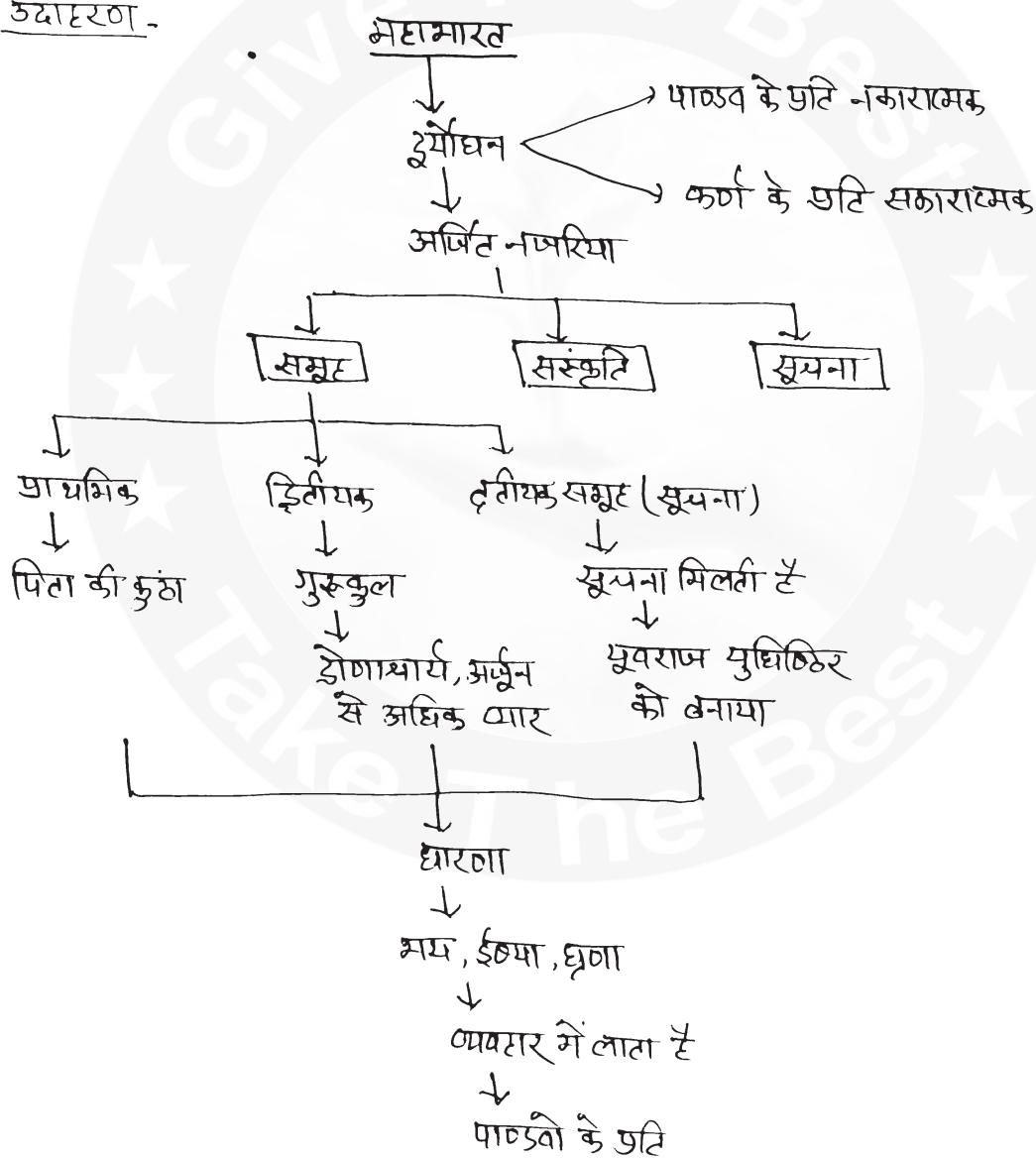
अथवा

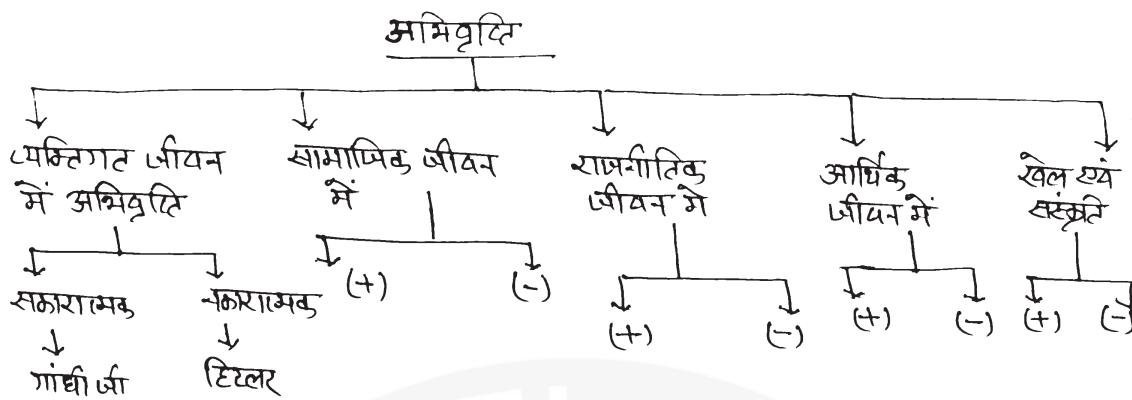
अभिवृति से आप क्या समझते हैं?

Ans. अभिवृति किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु या घटना के पुति पक्ष या विपक्ष की अवधारणात्मक अभिवृति है। गाँड़ेन आलपाई के अनुसार, "अभिवृति समकालीन सामाजिक, मनोविज्ञान की अतिविशिष्ट रूप अपरिहार्य अवधारणा है। अभिवृति जाकिं के वर्तमान एवं दूर से निर्मित होती है तथा भविष्य का निर्माण करती है।"

गत्पर्य है कि अभिवृति सौज्य पर निर्भर करती है यानि जि एक इसान, सिद्धिल सेवक, राजनेता, चायतिद्, अर्थशास्त्री या धर्मगुरु अपने जीवन में जो कुछ भी करेगा या नहीं करेगा वह उसकी अभिवृति पर निर्भर करता है।

सकारात्मक अभिवृति व्यक्ति में दृढ़ निश्चय, सद्बृशीलता, नेतृत्व कोशल तथा सामाजिक साहस और गुणों का विकास करता है जबकि नकारात्मक अभिवृति इनके विपरीत गुणों का विकास करती है।

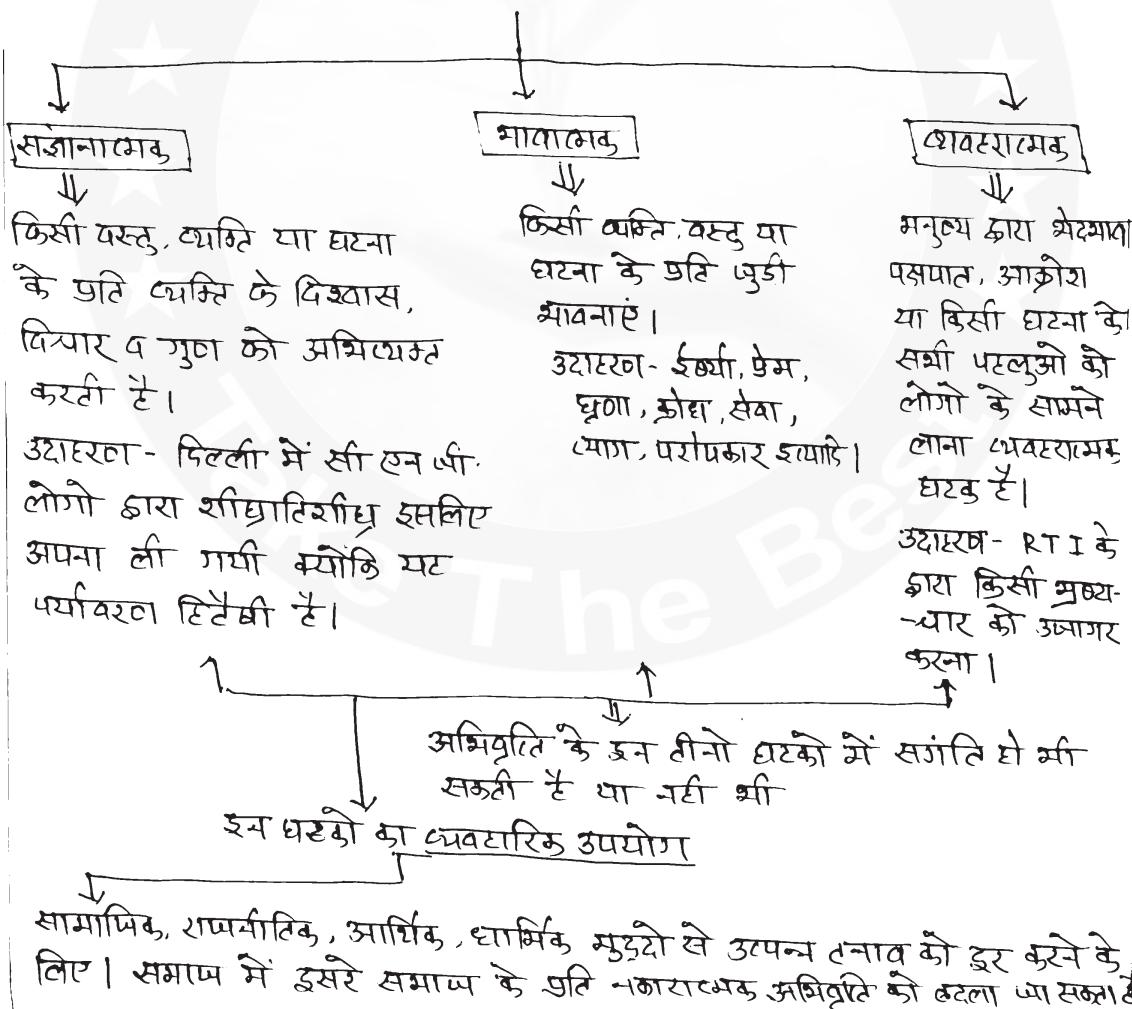
उदाहरण -



Question. अभिवृति की संरचना से आप क्या समझते हैं ?  
अथवा

अभिवृति के धर्मों पर क्या कीजिए ?

Ans. श्वेतोंका अभिवृति में तीन धर्म पाये जाते हैं -



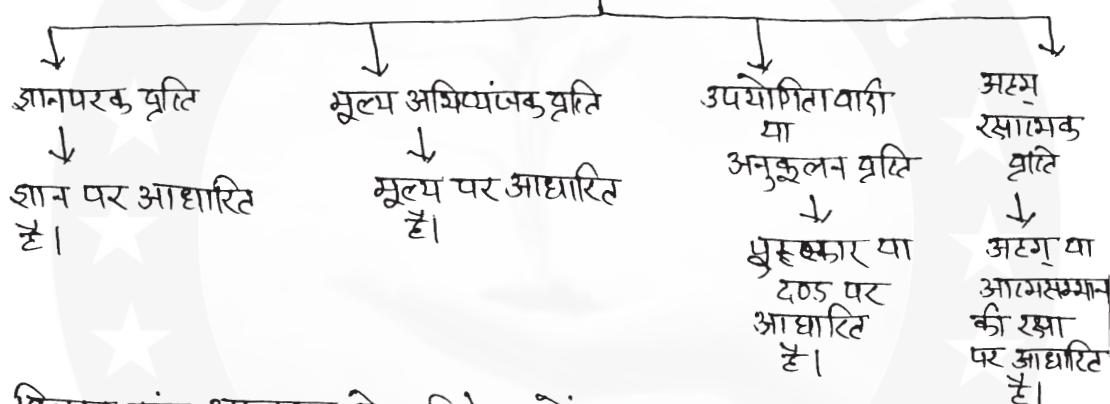
Question- अभिवृद्धि का कार्यपुणाली तथा आमरण पर व्या प्रश्नाव पड़ता है?

अथवा

कार्यपुणाली द्वारा आप्यरण के परिपेक्ष्य में अभिवृद्धि की  
परीक्षण जिम्मेदार ।

Ans.

अभियुक्ति के कार्य / वृत्ति - अभियुक्ति की शासन, प्रशासन रथा समाज में अध्यन्त भवत्पूर्ण शुभिका है जिसे - यह कुशल प्रशासन, कुशल आर्थिक प्रबंधन में भवत्पूर्ण शुभिका निर्गत है। अभियुक्ति के निम्न लिखित पार मूल्य कार्य हैं -

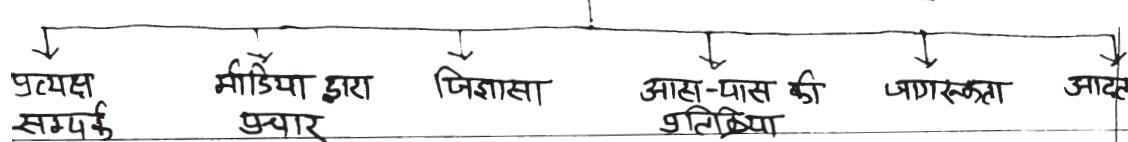


पिघार संघ आचरण के परिणीत्य में-

महां विद्यार से टापर्य किसी व्यक्ति, वस्तु या प्राण के सम्बन्ध में  
एक व्यक्ति की सकारात्मक व नकारात्मक सीधे हैं तथा आयरण  
से टापर्य किये जाने वाले उसी वर्वतार से हैं जो व्यक्ति  
विद्यार करके करता है।

उदाहरण- यह भान्ते हुये भी कि धुम्रपान पा शराब स्वास्थ्य के लिए दमिकारक है फिर भी लोग इसका खेवन करते हैं, यह अधिष्ठित रूप व्यवहार में असंगतता को दिखाता है।

अम्बेडकर को परिवर्तित करने वाले कारक



Question - नेतृत्व और राजनीतिक अभिवृद्धि से आप क्या समझते हैं?

Ans. - नेतृत्व अभिवृद्धि -

नेतृत्व अभिवृद्धि का सम्बन्ध किसी व्यक्ति के कार्यों के सटी-गलत, अप्रिं-अनुप्रिं, शुश्र-अशुश्र, कर्तव्य-दायित्व, कर्तव्य-अधिकार, पाप-पुण्य आदि के मुल्यांकन से पूँजा है।

नेतृत्व अभिवृद्धि का सम्बन्ध भनुष्य के आन्तरिक मुल्यों से है तथ्यों की परां शृंखिका नहीं होती है।

नेतृत्व अभिवृद्धि के आधार -

- ✓ सामाजिक मूल्य
- ✓ धार्मिक मूल्य
- ✓ नियमतादी मूल्य
- ✓ परिणामवादी मूल्य
- ✓ इतिहासिक मूल्य
- ✓ स्थालंप स्वातन्त्र्य

राजनीतिक अभिवृद्धि -

राजनीतिक अभिवृद्धि विचार का एक तरीका है कि कैसे किसी शासन प्रवक्ष्या को तथा राजनीतिकवाद की अच्छा माना जाये।

राजनीतिक अभिवृद्धि के आधार -

- ✓ समाज प्रवक्ष्या को कैसे कार्य करना पड़ता है कि एक आदर्श समाज प्रशासन की स्थापना हो सके।
- ✓ विधि धारी आदर्श प्रवक्ष्या को प्राप्त करने के लिए सबसे उपयुक्त तरीका क्या होना पड़ता है।

भुज्य राजनीतिक अभिवृद्धि -

- |              |                |
|--------------|----------------|
| ✓ जनतावाद    | ✓ गांधीवाद     |
| ✓ फासीवाद    | ✓ संविधानवाद   |
| ✓ समाजवाद    | ✓ लोकतन्त्रवाद |
| ✓ साम्प्रदाद |                |

Question- अभिवृति पर सामाजिक उभाव खंड धारणा का व्या पुभाव पड़ता है ?

Ans. अभिवृति का सामाजिक पुभाव -

अभिवृति, समाज में उपलित मूल्यों, रिति-रिवाजों, विश्वासी से श्री संसालित होता है जब कोई सामाजिक पुधा, रीति-रिवाज, धूल्य या विश्वास किसी व्यक्ति के कार्य को सकारात्मक या न-सकारात्मक रूप से पुश्यावित करता है तो उसे अभिवृतियों पर सामाजिक उभाव की संकेत दी जाती है।

उदाहरण- बाल प्रम के सम्बन्ध में व्यक्ति की सकारात्मक अभिवृति है कि बाल प्रम नहीं होना चाहिए और बालप्रम से पुड़े सहायाओं द्वारा कार्यवाही होनी चाहिए।

अभिवृतियों पर सामाजिक पुभाव का सरूप हमेशा स्थायी नहीं होता है उसे व्यक्ति का विवेक बदल भी सकता है।

सामाजिक उभाव का निर्धारण निम्नलिखित सामाजिक अभिवृतियों द्वारा होता है -

- ✓ दण्ड या पुरुष्कार
- ✓ बल प्रयोग
- ✓ विशेषज्ञता
- ✓ वैद्यता इत्यादि

धारणा एवं उसका प्रशासन में महत्व -

धारणा से तात्पर्य किसी वस्तु, घटना या व्यवस्था के पुति व्यक्ति की सुर्ख निर्भित सकारात्मक या न-सकारात्मक सौच से है। धारणा व्यक्ति खुद या इससे से पुश्यावित होकर बनाता है।

महत्व-

धारणा के द्वारा, व्यक्तियों, समाज, संगठन की अभिवृति को भानकर उसके अनुरूप कार्य किये जा सकते हैं और निर्णय लिये जा सकते हैं।

Question. 'क्रोध एक हानिकारक नाराजामुख संवेग है। यह प्रमित्तिगत जीवन और कार्य जीवन दोनों के लिए हानिकर है।'

(A) पर्याप्ति कि पठ किस छज्जर नाराजामुख संवेगों और आवंदनीय व्यवहारों को पैदा कर देता है।

(B) इसे कैसे प्रवस्थित रूप नियंत्रित किया जा सकता है?

(IAS 2016)

Ans. उत्तम उव्वलण्ड -

क्रोध एक हानिकारक नाराजामुख मानवीय भावना है जो प्रमिति की शारीरिक तथा मानसिक रूप से जुकाम पहुँचाती है, फलतः प्रमिति के प्रमित्तिगत जीवन तथा कार्य जीवन दोनों में अनेक समस्पाएं आती है।

क्रोध नाराजामुख संवेगों और आवंदनीय व्यवहारों को पैदा कर देता है जिसे मिन्न छिन्हओं से समझा जा सकता है -

- 1) ईर्ष्याओं/आंकाष्ठाओं और वास्तविकताओं के बीच अन्तर को समझ नहीं पाता।
- 2) असफलताओं के पुति स्वीकृति में कमी।
- 3) जीवन में अन्यानक घटलाव आदि के पुति स्वीकृति की कमी।
- 4) भनुष्य स्वार्थवश इसरों से पुतिस्पर्धा करने लगता है तथा नाराजामुख गतिविधियां एवं अवंदनीय व्यवहार करने लगता है।
- 5) पठ अपने पर्याप्त विचार तथा निर्णय से अपनी स्वयं की प्रतिक्रिया का शिकार हो जाता है।
- 6) उसमें अवसाद तथा आत्महत्या जैसी उत्तिका विकास होता है।

क्रोध को प्रवस्थित तथा नियंत्रित करने के उपाय -

महात्मा बुद्ध के सिद्धान्तों 'सम्यक् आखरण' अर्थात् मध्यम मार्ग का अनुसरण करें।

- ❖ ध्यान, प्रौग्य, अध्यात्म के माध्यम से क्रोध को नियंत्रित करें।
- ❖ अपनी रुपि अनुसार कार्यों को महत्व दे तथा व्यर्थ के हनाव से दूर रहें।
- ❖ भानवीय भैतिकता, सहिष्णुता, धर्मनिष्ठा, फृत्यपरायणता जैसे मूल्यों का अपने अन्दर विकास कर क्रोध से ब्याख्या भा सक्ता है।

Question: प्राप्त: पहला ज्ञाता है कि 'राजनीति' और 'भैतिकता' के साथ-साथ नहीं खल सकते हैं। इस सम्बन्ध में आपका क्या भट्ट है? अपने उत्तर का उदाहरणों सहित आधार बताइए। (2013 ]MS)

Ans: 'राजनीति' और 'भैतिकता' साथ-साथ नहीं खल सकते क्यों?

राजनीति, नागरिकी, राजनीतिक दलों, सांसदों, विधायकों, व्यापारिक संगठनों, धार्मिक व शैक्षिक गतिविधियों में उत्तर-दायित्व, कर्तव्य और अतिरिक्तता की अपेक्षा रखती है।

प्राप्त: देखने में आता है कि हमारे घनउत्तिनिधी अपने निष्पी स्वार्थों को आँगों कर जनता के अधिकारों की उपेक्षा करते हैं।

उदाहरण के रूप में राजनीतिक दूर्लक्षणों के रूप में साम, दाम, दण्ड, श्रेद, वैश्वाद, भाई-शर्तीज्ञायाद, राजनीति में अपराधीकरण व अपराधियों का राजनीतिकरण की प्रवृत्ति में वर्तमान में छोटीतरी दर्ज हुयी है जो राजनीति में भैतिकता के पतन का प्रदर्शित करती है। जो कहीं कहीं राजनीति में भैतिकता की एक विरोधाभास के रूप में सन्दर्भित करती है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में धर्मवादी विपारधारा शाही व शक्ति संलग्न और राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि मानती है बहिकृत भी थी।

भारत में लगभग उत्तोकु राजनीतिक दल सत्ता की प्राप्ति के लिए घा वोट छेंड की राजनीति के लिए तमाम उकार के ज्ञान व अनेक आरोपों का सदारा लेते हैं, जो बहिकृत विटीन राजनीति को उठाते हैं।

उदाहरण के रूप में बिहार में जनता ने वीतिश कुमार की गठबंधन यांत्री सरकार को खबादेश दिया था लेकिन धार्यकाल की समाप्ति के पूर्व ही वीतिश कुमार, आपके साथ मिलकर वही सरकार का गठन कर लिये जो कहीं व कहीं बहिकृत रूप से सही नहीं था।

इसलिए वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुये राजनीतिक उत्तमानों में बदलाव की आवश्यकता है जिसके लिए इतीपु उशासनिक सुधार आधोग की पौर्ण रिपोर्ट भट्टवपुर्ण है जिसमें अंतिमो / राजनेताओं के लिए मिश्न विशिष्ट खुजाप डिजे जाए है -

- ✓ भन्ती के रूप में उसकी नियुक्ति से पहले किसी भी व्यक्ति के स्वामित्व, किसी श्री प्रवसाय को पलाने और उसके गठबंधन में शाग लेने जिसमें इससे पहले शाग लेता था अपने सम्बन्ध की तोड़ देगा।
- ✓ सरकार से किसी भी उकार की अपल सम्पति को रखीदने या छोड़ने से अपने को अलग रखेगा।
- ✓ जोई भी भन्ती व्यक्तिगत रूप से या अपने परिवार के किसी सदस्य के भाष्यम से किसी भी उद्देश्य के लिए भाई पट राजनीतिक हो, धर्मार्थ हो या अन्यथा हो किसी भी पंडे को खीकार नहीं करेगा।

कोई भी मंत्री अपने निकट के सम्बन्धियों को दोड़कर किसी से भी शूलपत्रान् उपहारों को स्वीकार नहीं करेगा और वह या उसके परिवार के सदस्य किसी भी ऐसे व्यक्ति से उपहार बिल्कुल भी स्वीकार नहीं करेगें।

—

Ques. सामाजिक समस्याओं के उत्ति व्यक्ति की अभिवृत्ति के निर्माण में कौन-से कारण उच्चाव डालते हैं? हमारे समाज में अनेक सामाजिक समस्याओं के उत्ति विषम अभिवृत्तियां व्याप्त हैं। हमारे समाज में जाति उच्चा के बीच में क्या क्या विषम अभिवृत्तियां आपको दिखाई देती हैं? इन विषम अभिवृत्तियों के अस्तित्व को आप किस उठार स्पष्ट करते हैं? (2014 IAS)

Ans. अभिवृत्ति के निर्माण के कारण -

① समूह समझौता- व्यक्ति की बहुत सी भवित्वियों के विकास पर उस समूह का उच्चाव पड़ता है जिसके साथ उसका सम्बन्ध होता है। समूह के शूलियों, विद्यार्थी, भानुदण्डी आदि को स्वीकार करना उच्चा उनके अनुकूल व्यवहार करना व्यक्ति का कर्तव्य हो जाता है। इसमें परिवार व समाज एवं शिक्षण सम्बन्ध महत्वपूर्ण होती है।

② सूखना-

व्यक्ति का उच्चाव सूखनाओं का उच्चाव उसकी भवित्वियों निर्माण पर पड़ता है। समाप्तार पत्र, टीवी, सिनेमा आदि माध्यमों का उच्चाव सूखनाओं से हमारी भवित्वियों व परिवर्तित होती है।

③ सोशल लैरिंग- सामाजिक शिक्षण का उच्चाव हमारे भवित्वियों के निर्माण में महत्वपूर्ण होता है। सामाजिक, धार्मिक धारणा के अनुहृत भवित्वियों का विकास होता है।

④ सांस्कृतिक कारण    ⑤ व्यक्तित्व कारण    ⑥ भावनात्मक कारण

### जाति उच्चा के बारे में विषय अभियानों -

भारतीय समाज, जाति उच्चा का एक जटिल उदाहरण प्रस्तुत करता है जो अन्यत छहीं भी है।

जाति को लेकर अस्पृश्यता, रंगशेद, अस्वरूपता की अभियानों जीवन में जटीं न छटीं विद्यमान हैं।

### मेरे अनुसार जाति उच्चा के अस्थितिव का स्पष्टीकरण -

अनेक विषय अभियानों के बावधूद आधुनिकीकरण की उड़िया ने जाति विवरण को उभयोर किया है।

१ भारीय सोपान त्रुम में नीचे आने वाली जातियों का महत्व पहले से छढ़ा है जिससे जाति उच्चा सम्बन्धी विरोधाभास को बल मिला है।

२ राजनीतिक भवित्वाकांसा की मूर्ति टेकु अनेक राजनीतिक दल के प्रतिनिधी वीयती जातियों के यतां शोषण करके अस्पृश्यता को उभयोर कर रही है।

३ नीतियों के निर्माण अस्थान <sup>की</sup> अन्य सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक ऐदेशाव को दूर किया जा रहा है।

Question: स्पष्ट कीजिए कि आपारनीति, समाज और भावव का किस उकार मला करती है?

Ans. प्रस्तुत: आपारनीति, मानवीय क्लियाकलापों का ही अध्ययन करता है जिसे मिम्नलिखित उकार से समझा जा सकता है-

① यदि भवुष्य अपने जीवन में चेतिगत के मानदण्डों का पालन करता है तो वे केवल उसके अद्वार सङ्गुणों का विजास होता है वहिं सामाजिक उत्तीर्ण भी होता है।

- ③ आपारनीति, मानव को विपरीत परिस्थितियों में अड़िगा प सहज रहने की उरणा देती है जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास व समाज में सहयोग व समर्पय की शायद बलवती होती है।
- ④ भनुष्य, भौतिकता के माध्यम से स्पलित रीति-रियाजों की धुराइयों को मुक्त कर उनमें देश, काल खंड परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन लाता है।
- ⑤ पर्वमान आधुनिकीकरण व उपजीवनावादी युग में आपारनीति और भी भट्टत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि संसाधनों के लिये संघर्ष, विघ्नता, धोन छिसा, आंतकवाद, धार्मिक ऊर्जारता आदि के मिश्नीकरण में भौतिक भट्टत्वपूर्ण शूभ्रिता भिजाता है।

अतः इसकी उपयोगिता व्यक्ति और समाज दोनों के लिए निर्णायक खंड भट्टत्वपूर्ण है।

#### Question.

जीवन, कार्य, अन्य व्यक्तियों खंड समाज के प्रति हमारी अभिवृत्तियां आमतौर पर अनजाने में परिवार खंड उस सामाजिक परिवेश के द्वारा रूपित हो जाती हैं, जिसमें दूर बढ़े होते हैं। अनजाने में शास्त्र इनमें से कुछ अभिवृत्तियां खंड भूल्य अक्सर आधुनिक लोकतंत्रिक खंड समतावादी समाज के नागरिकों के लिए अवाहनीय होते हैं।

- ⑤ आज के शिक्षित भारतीयों में विद्यमान ऐसे आवाहनीय मूल्यों की विशेषज्ञता कीपिए।
- ⑥ ऐसे अवाहनीय अभिवृत्तियों को कैसे बदला जा सकता है तथा लोक सेवाओं के लिए आवश्यक समझे जाने वाले सामाजिक - नैतिक मूल्यों को आँखाई तथा कार्यरत लोकसेवकों में किस उठार संवर्धित किया जा सकता है ?

#### प्रश्न ५) शिक्षित भारतीयों में विद्यमान अवाहनीय मूल्य -

अभिवृति के निर्माण में परिवार, समाज, शिक्षण तत्त्वाएं तथा सामाजिक अन्तर्भुक्ति का इदं तक प्रश्नावित करती है और इसलिए यहाँ शिक्षित होने अशिक्षित अपनी अभिवृति को इन सबसे अलग घलगा नहीं कर पाता।

अवाहनीय मूल्यों में स्वार्थपरता, परिवारवाद, धार्मिक कृद्धरता, लोभ, ग्रोध, काम, भद्र, भाषायी संर्कीर्णता, आदि भौतिक्याद्वारा दर्शाये जाने वाले अभिवृत्तियां उत्पन्न करते हैं जो अशिक्षित ही व्यक्ति न हो इन सबसे परे नहीं रह पाता हैं।

प्रायः ऐसी अभिवृति सामाजिक, आर्थिक एवं राष्ट्रीयतिक लोकतंत्र के लिए खटरा बन जाती है। जाति और धर्म के नाम पर वोट बैंड की राष्ट्रीयति नकारात्मक अभिवृति का एक जीता-जागता उदाहरण है। शिक्षित लोग जो अलगाववाद और आंतरवाद को अपना लक्ष्य बना लेते हैं।

ऐसे अवाहनीय मूल्यों को कैसे बदला य लक्ष्यद्येत केमा जा सकता है -

सिविल सेवकों द्वारा लोक सेवकों के लिए ऐसे अवाहनीय मूल्यों

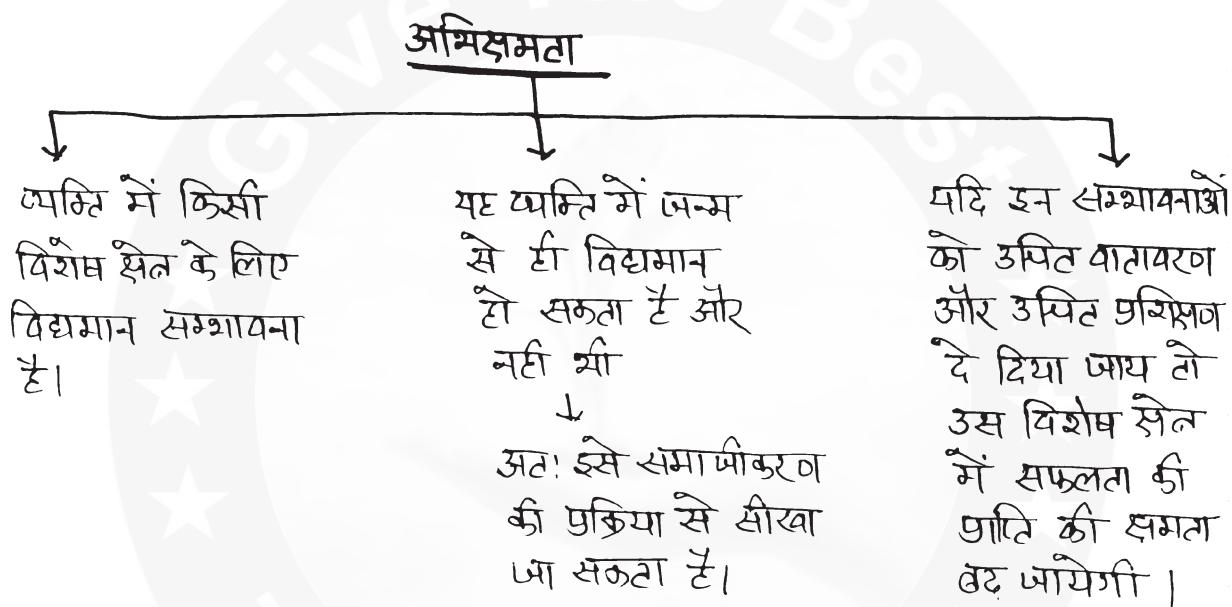
में परिवहन लोने के लिए आवश्यक संटिता तथा नीति  
 • संटिताओं का निर्माण किया गया है ताकि इन कार्यरत  
 सिविल सेवकों जो अभियुक्ति में सकारात्मक परिवहन लाने  
 इनमें सार्वजनिक यात्रियों में ईमानदारी, गैर-तरफदारी, करुणा,  
 निष्पक्षता, तेस्वित, सहानुश्रुति, नमस्त्रियों के उत्ति  
 संवेदना आदि शूलपो का विकास किया जा सके।

आकांक्षी तथा भारतीय लोकसेवकों में  
 सकारात्मक अभियुक्ति के लिए सत्यनिष्ठा, समानुश्रुति,  
 करुणा, ईमानदारी, गैर-तरफदारी शूलपो जो शिक्षा  
 तथा उशिक्षण के भावधार से समावेश किया जा सकता  
 है।

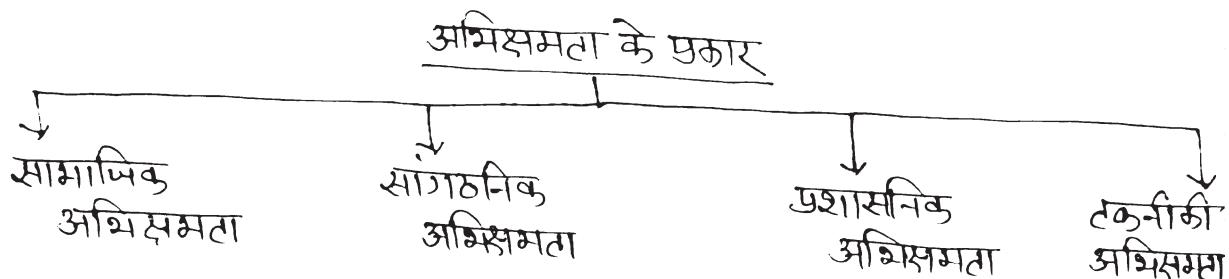
परिवार और सामाजिकरण की पुष्टिया  
 क्षार श्री इन शूलपो के उत्ति सकारात्मक रूप उच्च  
 शूलपो का समावेश किया जा सकता है।

## UNIT - III

सिविल सेवा के लिए अभिसम्भव तथा बुनियादी शूल्य,  
सम्पन्निष्ठा, भेदभावरहित तथा जैरतरफदारी, निष्पक्षता,  
साक्षभिक्ष सेवा के प्राप्ति समर्पण आव, कमज़ोर वर्गों के प्रति  
सहानुशृति, सटिष्ठणुता तथा सेवेदना।

सिविल सेवा के लिए अभिसम्भव-

समाजिक समझ, सहानुशृति, प्रगतित्व में वस्तुनिष्ठता, सटिष्ठणुता, दींग भावना, संवाद की समता, ध्यान, संकेदनशीलता, विश्वेषणात्मक समता, विज्ञम परिच्छिर्ति में श्री ब्रह्मतर निर्णय लेना, धैर्य, साध्य, नवाचार।



Question - सिविल सेवा के लिए अभियासमता कैसे महत्वपूर्ण है ?

सोलाइटरन स्पष्ट जीवित ।

अथवा

अभियासमता से क्या ताप्त्य है ? यह शासन प्रशासन में कैसे महत्वपूर्ण है ? सोलाइटरन स्पष्ट करें ।

Ans. प्रथम खण्ड-

अभियासमता, मानव समता का उम्मुख अंग है इसका ताप्त्य विभिन्न क्षेत्रों में कौशल या ज्ञान छापू छरें की अपेक्षित या अन्वायाह प्राप्ति से है । इसके आधार पर व्यविधात विभिन्नताओं की बताया या सज्जता है ।

मनोदैशासिक प्रिन्टर के अनुसार, " अभियासमता, किसी अपेक्षित के प्रशिक्षण के पश्चात उसके ज्ञान, दृष्टता या उत्तिक्रियाओं को सीखने की योग्यता है । "

द्वितीय खण्ड - भृत्या-

क्षमताओं का ज्ञान - नियोग्यन में आसानी

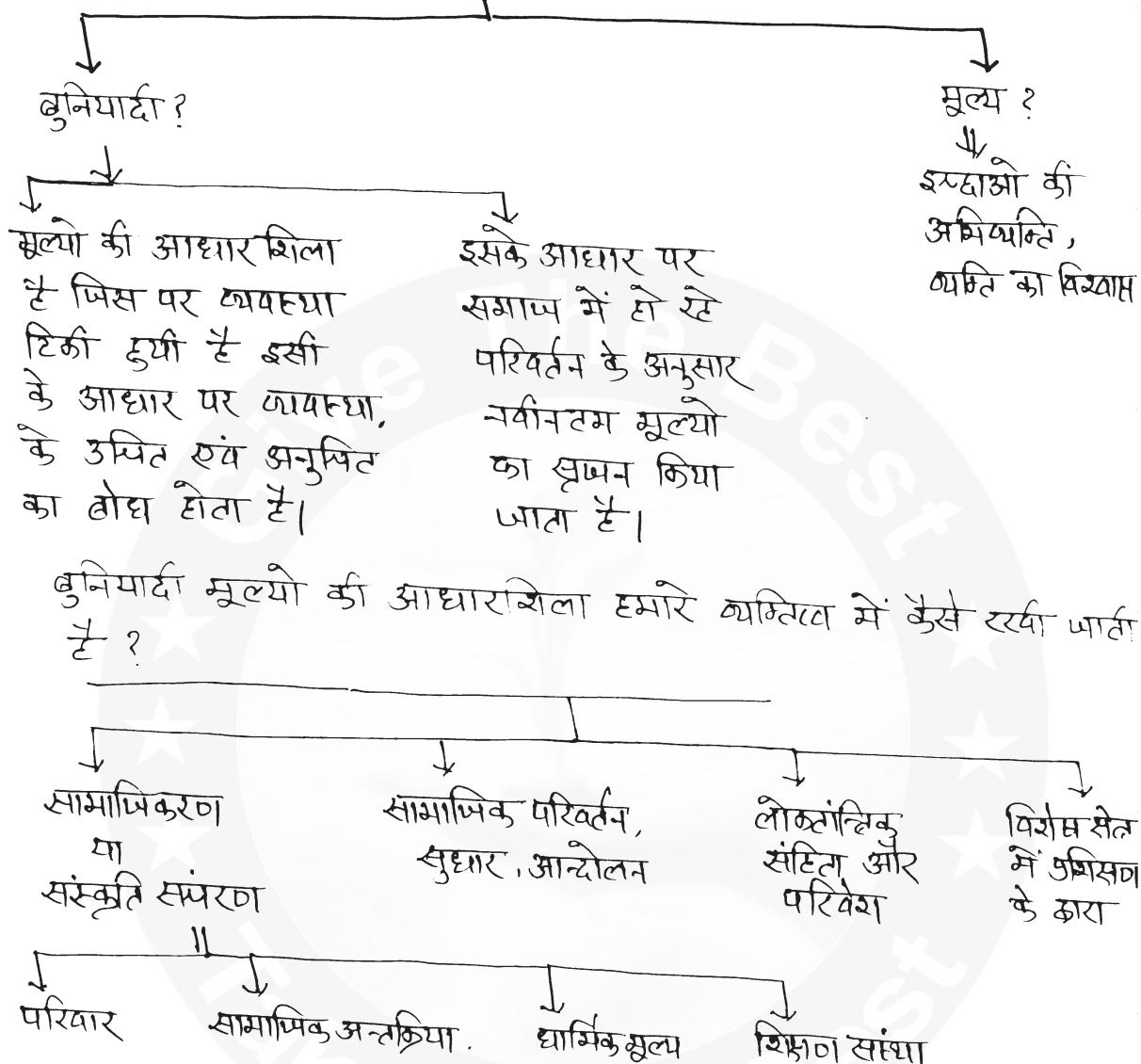
सिविल सेवा में घरनित होने की योग्यता का भी विश्वारण करते हैं जैसे - - याप नियोग्यन में,

- समस्या समाधान में,
- ✓ टार्किं विश्लेषण में,
- ✓ आंकड़ों के स्पष्टीकरण में,

अभियासमता परीक्षण, अधिकारियों, उर्मियारियों की उनकी शक्तियों या सीमाएं बताकर समयानुकूल बुधार का विकल्प उपलब्ध छरती है जैसे - - नीतियों की परिकल्पना, निर्माण तथा विपाच्यय में

- ✓ कुशासन की ल्पापना में
- ✓ विकास के समावेश में
- ✓ संविधान के आदर्शों की उपषि में

## बुनियादी मूल्य



Question. बुनियादी मूल्यों से आप क्या समझते हैं? इनकी सूची पुस्तक उत्ते हुये सार्वजनिक और निर्जी जीवन में इनकी महत्व छहायें?

**अध्यया**

बुनियादी मूल्यों से आप क्या समझते हैं? यह किस छार द्वारा दिए विरोधित की दूर भरने में सहायता है?

Ans: प्रथम खण्ड- पहले आधारभूत मूल्य विषये बिना लक्ख अस्ति निप्पी एवं सार्वजनिक जीवन में छेद्यतर समन्वय भवाता है।

शुल्पी- सत्यनिष्ठा, भेदभाव रहित, गैर-टरफदारी, निष्पक्षता, सार्वजनिक सेवाओं के उपर्युक्त समर्पण आव, लगभग वर्गों के उत्ति समानुशृति, संवेदना, जवाबदीहिता इत्यादि।

सार्वजनिक जीवन में भूलता-

- इट विरोधिता से सरखण्ड
- राष्ट्र की संस्कृति एवं विरासत से सरखण्ड
- उद्देश्यपूर्व काम करने की प्रेरणा
- निर्णय निर्भाव में जवाबदीहिता एवं पारदर्शिता
- वैतिक उत्साह

द्वितीय खण्ड-

इट विरोधिता- निप्पी इट एवं सार्वजनिक इट में लोग प्रलोगन प्राद्यवाप के कारण समन्वय की चिन्ता को इट विरोधिता छाटा भाता है इसे विवेक का संकट भी कह सकते हैं।

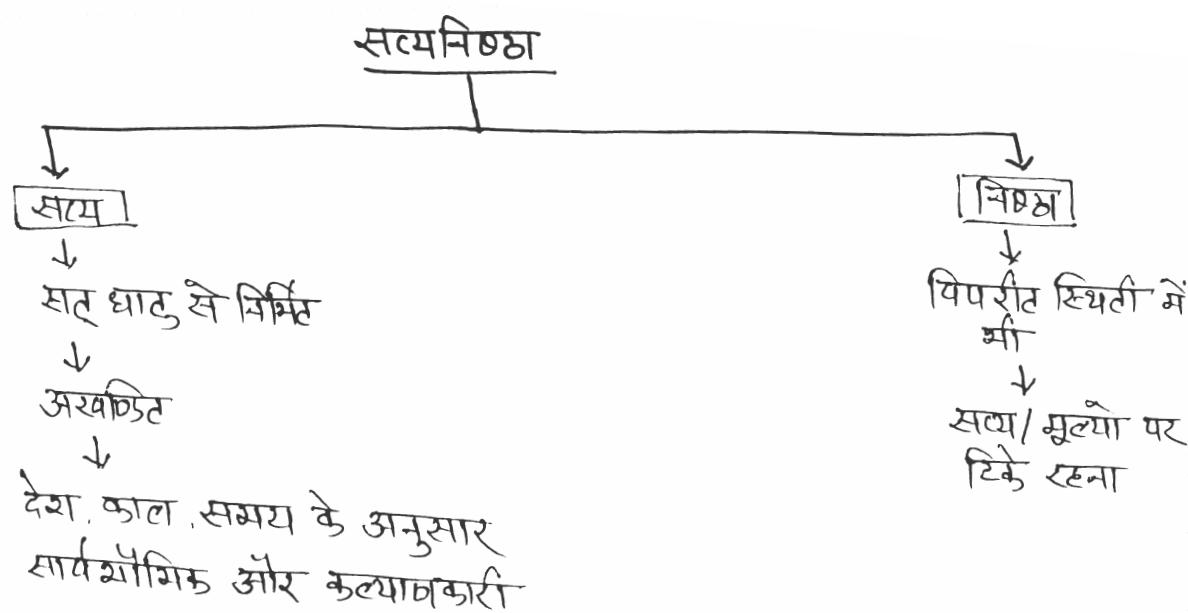
इट विरोधिता

वास्तविक

सम्भावित

इट विरोधिता इर करने में भुनियादी मूल्यों की शुभिका-

- प्रशासनिक स्वार्थवाद को टोकने में ये मूल्य अत्यन्त सहायता है।
- प्रशासकीय कार्यों में व्यापकिष्ठ के कारण छेद्यतर निष्पादन प्रा आडिक्षण
- अम्बा प्रशासनिक कार्य-संस्कृति का विनास



Question - सत्यनिष्ठा क्या है? यह उचासन में क्यों महत्वपूर्ण है? उदाहरण सहित अपने उत्तर की मुँहिट कीजिए।

Ans. सार्वभौमिक पद पर छह लोगों को बाहर के ऐसे व्यक्तियों या संगठनों के साथ वित्तीय या अन्य व्यापकावश अपने को लिप्त नहीं करना चाहिए जो उनके सरकारी कार्यनिष्ठाओं को उभावित करें।  
इसमें ईमानदारी, धृष्टियार्थ, उच्चलन व जनसहशारिता का ग्राव समादृत है।

#### नट्टर्ट:

- ~ उचासन में धृष्टायार से भूमि के लिए।
- ~ शासन उचासन में ध्वावदेविता इयं पारदर्शिता।
- ~ उचासनिक कार्यक्रमकृति जा सकारात्मक पहल।
- ~ इट विरोधिता से भूमि।

उदाहरण - भारतीय देश का 'मिशन सत्यनिष्ठा'

Question: सार्वजनिक सेवा के उत्ति समर्पण भाव से क्या आशय हैं?

Ans.

सेवा भावना वह ग्रन्थिति है जिसमें कार्य इस भावना से किया जाना है कि 'यह करना मेरी बैतिक जिम्मेदारी है', यह बैतिक शासन का आधार है।

विशेषताएँ -

- ✓ कार्य में आनन्द मिलना।
- ✓ अपने अस्तित्व को समाज से समझना।
- ✓ नागरिकों की प्रकृतों को पूरी संवेदना के साथ समझना।
- ✓ नागरिकों की आवश्यकता का समानुगम लाने की समता।
- ✓ किसी श्री प्रकार की श्रद्धालु एवं तरफदारी से दृष्टि।
- ✓ सिविल सेवा जपार संटिता का अनुपालन

परिणाम / लाभ -

- ✓ शासन का बुशासन एवं समावेशन में हपान्तरण

Question - कमज़ोर वर्गों के उत्ति समानुशृति, सदिष्ठुता तथा संवेदना, भ्रदभावरहित, औरतरफदारी से आप क्या समझते हैं?

Ans.

कमज़ोर वर्गों से आशय -

जो विकास / वितरण की प्रक्रिया में छाशिए पर रह जाये है, इसमें ऐसी, ऐसी, वृक्ष, वर्ष, विकलांग, गरिलाएं तथा जरीब सर्वर्ण शामिल हैं।

इन वर्गों के उत्ति समानुशृति, संवेदना, तथा इनको सहन करने की योग्यता का विकास का भाव इसमें समाहित है।

Quesition - हमें देश में भटिलाओं के प्रति घोन-उर्पीज़न के बढ़ते हुये इष्टान्त दिखाई दे रहे हैं। इस कुकृत्य के विरुद्ध विद्यमान विधिक उपबन्धों के द्वारा हुये भी, ऐसी भावनाओं की सरण्या बढ़ रही है। इस संकट से निपटने के लिए कुछ नवाचारी उपाय क्षम्भाश्ये। (2014 IAS)

Ans.: देश में भटिलाओं के प्रति घोन-उर्पीज़न के बढ़ते हुये इष्टान्त दिखाई दे रहे हैं क्यों?

हमारे देश में भटिलाओं के प्रति घोन-उर्पीज़न और हिंसा की घटना दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है इसके मूल कारणों में हमारे समाज में व्यापृ पिंडसत्ताभव स्थिय, है जो भटिलाओं की दोषम दर्जे के रूप में, निर्भर प असहाय समझने की परम्परा के रूप में विद्यमान है। यह लड़ उठार से भटिला-गरिमा के विरुद्ध हो ही ही साध ही साध भानवाधिकार प संविधान के खिलाफ भी है।

ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए पिंडसत्ताभव पृष्ठलि है जिसमें बदलाव लाने की जरूरत है। इस समस्या के समाधान के लिए कुछ नवाचारी उपाय निम्न हैं-

- ✓ सर्वसे पहले व्यक्तिगत व सामाजिक रूप में लोगों को आगे आना होगा वहींकि विधिक उपबन्धों के भारा ऐसे माझली की कुछ समय के लिए रोका जा सकता है परन्तु स्थायी तौर पर रोकने के लिए भटिलाओं की स्वंय आवाज उठानी होगी व समाज का सहयोग भी अपेक्षित है।
- ✓ प्रथक बैन प दफ्तरों में नियोजिता पर निर्भर एक बार्थर

भटिलाओं को स्थंय लड़ समूट बनाना होगा जहां वे अपनी गाट को साझे तोर पर रख सकें और खुद पहल करें। पुलिस लार्यवार्डी का इन्टंजार न करें।

लोगों में खागरुकता के लाने के लिए भौपाल व संगोष्ठी का आधोप्पन करना पर्हिए।

#### कुछ अन्य उपाय-

कठोर कानूनों के निर्माण से पहले अपलब्ध कानूनों का सफल लिपान्वयन।

परम्परा, रीति-रिवाज व मान्यताओं को खत्म करना जो भटिलाओं के छह टोन वाली टिस्सा को बढ़ावा देती हो।

भीड़िया के माद्यम से ऐसे भामलों को संवेदनशीलता के साथ जनता के समक्ष रखें।

थोब टिस्सा की शिकार भटिलाओं तक सूखना व स्पार सेवा की पहुंच बुलबू हो।

पीड़ित भटिलाओं के गम्भीरों के लिए पुलिस, स्वास्थ सेवा आदि सुनिश्चित करना।

भटिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सामाजिक, राजनीतिक, व प्रशासनिक सेवा में उनकी आजीवारी सुनिश्चित करना।

#### Question-

रक्षा सेवाओं के सन्दर्भ में 'देशभक्ति' राष्ट्र की रक्षा के लिए में अपना जीवन उत्सर्ज करने तक की तत्परता की अपेक्षा करती है। आपके अनुसार, दैनिक असेमिक जीवन में देशभक्ति का क्या ताप्त्य है? उदाहरण उस्तुत करें दृष्टे इसको स्पष्ट कीजिए और अपने उत्तर के पश्च में तर्क दीजिए। (IAS 2014)

Ans

रक्षा सेवाओं के सन्दर्भ में देशभक्ति, देश के सीमाओं की रक्षा के लिए अपने छानों की आदुति देना व विपरीत परिस्थितियों में भी देश के लिए खड़े रहना आदि को सन्दर्भित करता है।

परन्तु असेमिक जीवन में देशभक्ति, देश के उत्ति उर्ध्वों के निर्वहन की जिम्मेदारी व दायित्व ग्रोध को छतलाती है जिसे बिन्न उठार से समझा जा सकता है-

- » संविधान में वर्णित भौतिक उर्ध्वों का पालन
- » आन्तरिक संघर्ष तथा आपसी वेरभाव को कम अथवा समाप्त करना।
- » राष्ट्र के सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक, आर्थिक इयं भौतिक विकास के लिए व्यक्तिगत स्तर पर पहल कर आपसी सद्भाव को व्यापा देना।
- » सामुदायिका, खातिवाद, परिवारवाद को कम अथवा समाप्त करके देश के इति में पहल करना।
- » व्यक्तिगत स्तर पर राष्ट्र के उत्ति निष्ठा का भाव विकसित करना।
- » 'मैं' की भगाट 'हम' की भावना का विकास करना।

Question- क्या कारण है कि निष्पक्षता और अपक्षपाठीयता को लोकसेवाओं में विशेषज्ञ वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक सन्दर्भ में, आधारभूत मूल्य समझना भाहिए? अपने उत्तर की उदाहरणों के साथ लुस्पष्ट कीजिए।

(2016 IAS)

Ans. सामाज्य अर्थों में निष्पक्षता, नियमानुसार कार्य करने की उद्देश्य है जो बिना पूर्वाग्रह के, बिना किसी दिरोध के, बिना किसी के समर्थन के अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहताती है।

एक सिविल सेवक किसी घटित या समुदाय विशेष के लिए कार्यरत नहीं होता बल्कि पूरे समाज व राष्ट्र के लिए अपनी सेवाएं प्रदान करता है ऐसे में सामाजिक व्याय की स्थापना के लिए यह आवश्यक है कि सिविल सेवक के अन्दर निष्पक्षता का गुण विद्यमान हो।

सिविल सेवक को किसी विशेष राजनीतिक विचारधारा के दबाव में कार्य नहीं करना पाइए निःसीम लोकतांत्रिक भूल्यों की स्थापना में मदद मिले।

इसलिए निष्पक्षता को और अपक्ष-पार्टीयता को आवश्यक नीतिक भूल्य समझना पाइए।

वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिवृत्त्य में आय असमानता (आँखेफेंग की रिपोर्ट) और विभिन्न राजनीतिक दल जाति, धर्म, लोह आदि विभिन्नों पर वोट ढंक की राजनीति में लिप्त है ऐसे में खड़ी है कि सिविल सेवकों में निष्पक्षता और अपक्षपार्टीयता का गुण होना चाहिए।

उदाहरण के लिए यदि एक भज्जुर को उसके नियोक्ता व्यापार वा ठेकेदार व्यापार उपित व निर्धारित मज्जुरी नहीं दी जाती है और वह भज्जुर कलेक्टर व्याय के लिए शापन देता है तो और एक सिविल सेवक उस भज्जुर के पक्ष में व्याय देकर उस नियोक्ता का पक्ष लेता है तो यह सामाजिक व्याय की संकलना को पूर्ण नहीं कर पायेगा इसलिए निष्पक्षता और अपक्षपार्टीयता को व्युत्थानी भूल्य समझना चाहिए।

Question. समझोते से पूर्ण रूप से इन्कार करना सत्यनिष्ठा की रुक्त परख है। इस सन्दर्भ में वास्तविक जीवन से उदाहरण देते हुये व्याख्या कीजिए। (IAS 2017)

Ans. सत्यनिष्ठा से आशय-

सत्यनिष्ठा से आशय सार्वजनिक पद पर बैठे व्यक्ति को बाहर के ऐसे घटियों या संगठनों के साथ विलीय या अन्य बाध्यतावश अपने को लिप्त नहीं करना चाहिए जो उनके सार्वजनिक कार्य जीवन को विपरीत रूप से प्रभावित करें।

आज के आधुनिकीकरण व उपजीवनावधी में यहाँ की आवश्यकताएँ बढ़ रही हैं फलतः यहाँ सार्वजनिक पद पर बैठे होने के बावजूद निजी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संगठन के बाहर बैठे व्यक्ति से समझौता कर लेता है जो उसके कार्य की सत्यनिष्ठा को प्रभावित करता है।

उदाहरण के लिए, जर्मनीया या अधिकारी का बेटन कम होना, निप्पी खसरतों को पूरा न कर पाने के कारण जर्मनीया अधिकारी, पारिवारिक व सामाजिक दबाव में अनेक आपरण करने के लिए दिवाश हो जाता है।

किन्तु एक सत्यनिष्ठ उदासक अपने जर्त्यों व दायित्वों से छिनी उकार का समझौता नहीं करता है, भले ही उसे अपने व्यक्तिगत जीवन में किसी भी समस्याओं का सामना कर्यों न करना पड़े।

इस उकार सत्यनिष्ठ व्यक्ति रहना एक फुलीपूर्ण कार्य है किन्तु इसका इमानदार उदासक सत्यनिष्ठा के मार्ज में और वाली प्रत्येक बाधा को पार करते हुये सत्यनिष्ठ उदासक के रूप में भेरणा क्लौत बनता है।

Question- पर्वित राष्ट्रीय सम्पति के लाभों का खायोपित वितरण नहीं हो सका है। इसने 'बढ़मत' के नुकसान पर केवल दौरी अल्पसंख्या के लिए ही आधुनिकता और वैश्व के एन्कलोव 'बनाये हैं। इसका औपचार्य सिक्ख चिपिटा।  
(IAS 2017)

Ans. आंडसफेम की विश्व असमानता रिपोर्ट के अनुसार गरीब निश्चल गरीब होता था रहा है और अमीर उतना ही अमीर होता था रहा है।

पुस्तक अर्थशास्त्री धोमस पिकेटी ने भी यह माना है कि शाहर में आय छी असमानता दिन प्रतिदिन बढ़ती थी रही है।

ऐसा इसलिए हो रहा है कि सार्वजनिक पद पर होठे व्यक्तियों में सम्पन्नता, ईमानदारी, के मूल्यों में कमी है और इसके विपरीत उनके अन्दर काग, कौशल, भद्र, लोक जैसे अवांछनीय मूल्यों की अधिकता है जिससे खेलोंश भी आवश्यकता से अधिक सम्पत्तियों का संग्रह करते हैं।

लोकतान्त्रिक राजनीतिक व्यवस्था में बढ़मत का शासन होता है किन्तु समाजीका विकास की भवोत्तुति के बिना विकास केवल कुट लोगों तक सिमटकर रह पाता है।

भारतीय संविधान के नीति निर्देशक टृतीये में अनुच्छेद 39 में राष्ट्रीय सम्पति के -खायोपित वितरण का संकलना व्यक्ति की गर्भी है किन्तु राजनीतिक इच्छा शक्ति के अशाव, लोगों में खागड़कर की कमी आदि कारणों से राज्य अपनी प्रियोदारियों का धून नहीं कर पा रहा है।

इस असमानता के लिए अष्टापार आदि कारण उत्तरदायी है जिससे नेतृत्व संकट उत्पन्न हो जाता है जिसके पर्याप्त अधिकार लाभ प्राप्त करने के लिए संघर्ष होता है।

को परिवर्ता को ध्यान में नहीं रखता है।

**इस समस्या के समाधान के लिए कानून के साथ-साथ नैतिक मूलपौ छोड़ा जाना चाहिए**

**Question:** अनुशासन में सामान्यतः आदेश पालन और अधीनता निष्टि है। फिर भी पट संगठन के लिए उत्पादक हो सकता है। ऐसा क्यों? (IAS 2017)

**Ans:** अनुशासन

अनुशासन व्यक्ति द्वारा संगठन के विकास के लिए भवित्वपूर्ण है। अब अनुशासन के अभाव में बेहतर कार्य-संस्कृति ला विकास नहीं हो पाता और इसका उभाव संगठन पर नाकारात्मक रूप से पड़ता है।

**आदेश प्रक्रिया अधीनता-** संगठन में पद सौपानिक क्रम में उच्च से निम्न पदानुक्रम पाया जाता है, जो अधिकारी पदानुक्रम में ऊपर होता है उसके आदेश का पालन पदानुक्रम में नीचे वाले अधिकारी या कर्मस्थारी को करना पड़ता है, इसलिए ऐसा माना जाता है कि अनुशासन में आदेश पालन और अधीनता निष्टि है।

अनुशासन को बनाये रखने के लिए उच्च स्तर के अधिकारी के पास निम्न स्तर के अधिकारी, कर्मस्थारी जो दिग्जिट बैंक का अधिकार होता है इससे एक उठार की अधीनता की भावना पैदा होती है।

लैंकिन हमें पट द्यान रखना होगा कि प्रथम उठार से अनुशासन अर्थात् आदेश पालन और अधीनता किसी संगठन के लिए उत्पादक भी हो सकता है। इसका आदेश पालन करने की भावना, निम्न अधिकारी या कर्मस्थारी पर उपित उभाव नहीं जलेगा अपिटु उत्पादकता विपरीत रूप से भी उभावित हो सकती है जिससे ईम भावना, कार्य संस्कृति, सब उम्मीदों और संगठन की उत्पादकता नाकारात्मक रूप से कुम्भावित होगी।

जहाँ उच्च अधिकारी को पाएं छि वे निम्न अधिकारी य  
कम्प्यारिंगो को अभियुक्त करें, इस शावना से जार्य करें  
जिससे ब्रेटर कार्यसंकृति का विकास होगा और संगठन  
की उत्पादकता भी सकारात्मक रूप से होगी ।



## UNIT- IV

**भावनात्मक समझ:** अवधारणाएं तथा उत्थान समझ और शासन व्यवस्था में उन्हें उपयोग और प्रयोग

**Question-1** भावनात्मक समझ से आप क्या समझते हैं? इसकी प्रमुख विशेषताएं क्या हैं?

**Question-2** भावनात्मक समझ क्या है? शासन में यह क्यों महत्वपूर्क है?

**Ans-1** भावनात्मक समझ-

डेमिपल गोलमैन के अनुसार, " संवेगात्मक बुद्धि अपने सदेंगों को खाने संबंधी देखभाल करने तथा इससे में इनकी पृष्ठान करने संबंधी अपने सम्बन्धों को कापम करने की योग्यता है।"

भावनात्मक समझ वाले व्यक्ति में निम्न योग्यताएं होती हैं-

- ✓ अपने आप को समझने की योग्यता
- ✓ अपने सदेंगों की उपर्युक्त अभियानों की योग्यता
- ✓ अपने आप को छोरिट करने की योग्यता
- ✓ खोरिकम मूल्यांकन की योग्यता
- ✓ छन्द समाधान की योग्यता

भावनात्मक समझ की विशेषताएं / अवधारणाएं-

- ✓ भावनाओं को समझना
- ✓ आत्म अभिभृतना
- ✓ अपने सम्बन्ध स्थापित करना
- ✓ समाधीन रूप निर्णय
- ✓ तालमेल व समन्वय

✓ विषयवाची की पर्याप्तता

कुद अन्य विशेषताएँ - ✓ पुसन्ता एवं सफलता

✓ दूसरों का सकार

✓ कार्य सम्पादन छेतर

भावनाभूक समझ का शासन - प्रश्नासन में भवय-

✓ अन्तर्रैप्रिक्टिक कौशल तथा अन्तर्रैप्रिक्टिक कौशल के कारण समझों  
परिष्ठों तथा क्षमिष्ठों के साथ छेतर सम्बन्ध

✓ सामाजिक सम्बन्धों के प्रबन्धन का कौशल

✓ संग्राह लें य समय प्रबन्धन का कौशल

✓ टीम भावना कौशल

कुद अन्य -

✓ संगठन निर्माण कौशल

✓ पुस्तुतीकरण क्षमा

✓ दिव्यास कौशल

✓ टनाव प्रबन्धन

✓ लोपशीलता लें तथा निर्णय निर्धारण कौशल

### Question.

'भावनाभूक प्रश्ना' क्या होता है ? और यह लोगों में किस प्रकार विकसित किया जा सकता है ? किसी व्यक्ति विशेष जो नेतृत्व निर्णय लेने में यह कैसे आवश्यक होता है ?

(2013 IAS)

Ans. प्रथम खंड - भावनात्मक प्रश्ना से आशय --

हिटीभ खंड - लोगों में भावनात्मक प्रश्ना निम्न उकार से विशिष्ट किया जा सकता है -

- ✓ लोगों की परम्परा द्वारा विचारों के भाव्यम से
- ✓ भजदृढ़त सम्बोधन द्वारा
- ✓ भागारूपता अधिकार द्वारा
- ✓ भट्टमुख कराकर

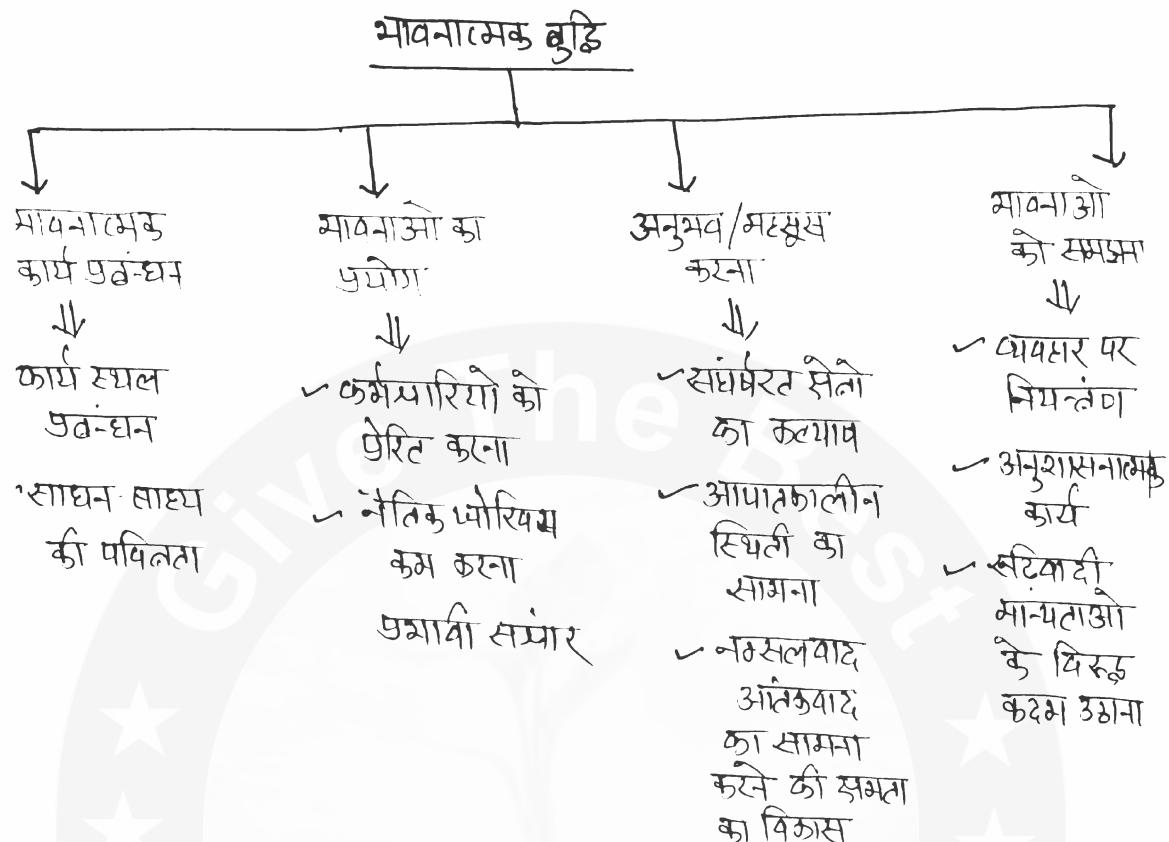
द्वितीय खंड - भावनात्मक प्रश्ना इसी प्रक्रिया को निर्णय लेने समर्थ निम्न प्रकार से सहायता कर सकती है -

- ✓ एक अच्छी बुद्धि वाला प्रक्रिया सफल हो सकता है कि निम्न उपर्युक्त पर पहुँचने के लिए भावनात्मक समझ का होना चाहिए।
- ✓ भावनात्मक प्रश्ना से प्रक्रिया में समारोहक, सोच, दृष्टि भावना तथा नेतृत्व क्षमता का विकास होता है।
- ✓ प्रक्रिया में समानुशृति द्वारा समाधिकृत कौशल का विकास होता है।
- ✓ प्रक्रिया में आत्म विनियम की शक्ति में बुद्धि होती है जिससे निर्णयन क्षमता में बुद्धि होती है।

Question- प्रशासनिक पक्षतियों में भावनात्मक बुद्धि का आप किस तरह उपयोग करें?

(IAS 2017)

Ans. प्रशासन में भावनात्मक बुद्धि की उपयोगिता या महत्व -



- ✓ उपर्युक्त का प्रयोग प्रशासनिक पद्धतियों में कर सकते हैं।
- ✓ भावनात्मक बुड़ि के द्वारा सामाजिक जिम्मेदारियों, आवेदन नियन्त्रण, आशावाद तथा तनाव की इल करने का उपाय करेंगे।

## UNIT-IV

**भारत द्वारा विश्व के भौतिक विचारकों द्वारा दर्शनिकों के योगदान**

**NOTE-1** किसी भी भौतिक विचारक का कथन देखर उसकी वर्तमान सांस्कृतिक पुष्टि भाला है अतः विचारकों की मूल भाले / सिन्हान्तों / विचारों को समझना भाल है और इसी समझ के आधार पर ही वर्तमान सन्दर्भ से क्रेन्ट/अस्थास करना है।

**NOTE-2** अधिक विचारक पढ़ने के बाय कुछ उमुख विचारकों पर लंगातर अस्थास भर समझ विकसित करने का उपास करें।

**NOTE-3** - नेता, सुधारक, प्रशासक, भौतिक विचारक को एक साध झोड़ कर देखें।

### प्रथम पुष्टि की पृष्ठि

↓  
किसी भौतिक विचारक  
ने आपको छेरित किया

↓  
कथन द्वारा वर्तमान  
में उनकी प्रासंगि-  
-कता

### भौतिक प्रिंटर / विचारक

↓  
यूनानी भौतिक  
दर्शन  
↓  
~ स्टोफिस्ट  
~ सुकाट  
~ लैटो  
~ अरस्टू

↓  
आधुनिक भौतिक  
दर्शन  
↓  
~ उपरोगितवाद  
~ विकासवाद  
~ काण्ट  
~ अन्तःप्रजावाद  
~ आत्मपुर्वतवाद  
इत्पादि

Question- सुकरात ने सत्य की खोज को ही अपने नेतृत्व भीवन और उपदेशों को आदर्श संवं मापदण्ड बनाया। पर्याँ कीजिए।  
अप्पवा

'सत्य की खोज' भीवन का परमलक्ष्य हैः सुकरात।  
इस कथन की वर्तमान प्रासंगिकता बताइये?

Ans. उथम खण्ड-

सत्य की खोज को प्रमुख आदर्श मानने के पीछे उन्होंने कारण दिया कि जीवन और जगत के विषय में हमारा ज्ञान बहुत सीमित है अतः हमारा प्राथमिक उद्देश्य ज्ञान पाहि ढारा जीवन और जगत को अधिक से अधिक ज्ञानना है।

डिटीप खण्ड-

सुकरात के अनुसार सभी उकार की बुराईओं का कारण केवल अज्ञानता है। अतः अज्ञान के निराकरण से बुराईयाँ भी दूर हो जाएगी।

सिक्किक विवेक, साध्स, संयम, न्याय आदि सभी सद्गुण ज्ञान के रूप हैं इन्हीं के द्वारा सत्य तक पहुँचा जा सकता है।

सीमाएं-

अरस्टु जे कहा है कि 'श्रेष्ठ मनुष्य लोक के लिए सद्गुणों का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है' उनके अनुसार आवरण करना भी आवश्यक है।

प्रासंगिकता-

- ✓ भ्रष्टाचार निवारण में
- ✓ विकिसकीय नेतृत्व में छमी
- ✓ शैक्षिक व पर्यावरणीय नेतृत्व में छमी
- ✓ अन्तर्राष्ट्रीय नेतृत्व
- ✓ व्यवसायिक नेतृत्व इत्यादि
- ✓ सुशासन की स्थापना
- ✓ अंतर्राष्ट्रीय का समापन

लेटो-

मुख्य नैतिक आदर्श- जो व्यक्ति सदैव सदगुणों के अनुसार

आपरण करते हुये बुँदि के भागीदारी में सुख रुप आनन्द खापू बरता है उसका जीवन वास्तव में सन्तुलित रुप सामजिक पूर्ण है। ऐसे जीवन को ही उन्होंने नैतिक इच्छियों से लब्धीतम् रुप आदर्श जीवन के रूप में घोषित किया।

प्रासंगिकता -

- अधिकारी कार्य- संस्कृति की इच्छियों से भरतवृर्ण।
- अष्टाव्यार निवारण, गैर तरफदारी और निष्पक्षता आद्यारित।
- प्रशासनिक व्यवस्था के लिए भरतवृर्ण।
- प्रशासनिक अधिकारियों और राजमीमित्यों को विवेकानन्द सभा की ऐरण।
- बुँदि रुप व्यावना के सम-वय से हिंदू विरोधिता का समाधान।
- व्यापूर्ण समाज की स्थापना।

Ques. अरस्तू के नैतिक विचारों को वर्णित करते हुये उसकी पर्त-मान प्रासंगिकता का उल्लेख कीजिए।

Ans. अरस्तू के नैतिक विचार-

लेटो के समाज अरस्तू जी भाजव जीवन का लक्ष्य (साध्य) बुँदिसंगत रुप विन्तनशीलं विपरो छारा प्राप्त आनन्दशाव (भाजव छलपाण) को मानते हैं। इसके लिए (इस लक्ष्य की प्राप्ति) उन्होंने साधन के रूप में सदगुणों के आपरण की जीवन से जोड़ने का विचार दिया है।

ग्रासिकता / उपचारिता -

- प्रशासनिक वित्तपर्धीता
- नियर रुप इह इन्द्रियाशक्ति
- व्याय वृर्ण समाज
- मिलवत भाव
- समन्वय
- आपार विचार रुप किया में स्वतन्त्रशीलता

उपयोगितावाद

- ✓ प्रट सिङ्हास्त मनुष्य के अपने सुख या हिंसा के स्थान पर
- ✓ अधिकृतम ज्यन्तियों के अधिकृतम सुख' या हिंसा को समरूप मानतीय कर्मों के शुभ / सुख का मापदण्ड मानता है। (साध्य)
- ✓ प्रमुख विचारक - ब्रह्म, ज्ञेयस मिल, हेनरी खिप्पिक ।

सुख के स्वरूप के सम्बन्ध में एक दूसरे से झुर्णतः सहमत न होते हुये भी ये सभी दार्शनिक 'अधिकृतम ज्यन्तियों के अधिकृतम सुख' को उपयोगितावाद का मूल आधार मानते हैं।

उपासनागता -

- ✓ सभी तक शिक्षा की पहुंच' की तरफ बढ़ने की धूरणा ।
- ✓ सार्वज्ञानिक स्वास्थ्य सेवा की उपलब्धता
- ✓ सभी तक आवास पर खाद्य सुख्ता की पहुंच
- ✓ अधिकृतम राजनीतिक भागीदारी
- ✓ आर्थिक संसाधनों का व्याप्रपूर्ण वितरण

Question. स्वतःसाध्य से आप क्या समझते हैं? विचारकों (नीतिशास्त्र) के दृष्टिकोण से इसे व्यष्टि कीजिए।

Ans. स्वतःसाध्य - जो स्वयं में सर्वोच्च लक्ष्य हो।

इस स्वतःसाध्य सुख को प्राप्त करने के लिए देश, काल और परिस्थिती में साधन लंय साध्य के भवय तर्कपूर्ण सम्बन्ध भारत लंय विश्व के प्रमुख नेतृत्व विचारक इसे अपने-2 टंग से अशिक्षान्त करते हैं इसे हम उनके नेतृत्व विचार कहते हैं।

- ✓ संविधान के आदर्श, सुशासन, समावेशन इत्यादि स्वतःसाध्य कहे जा सकते हैं।

Question- तीन महान नैतिक विचारकों / दर्शनिकों के अवतरण नीचे दिये गये हैं। आपके लिए प्रत्येक अवतरण का वर्तमान सन्दर्भ में क्या भूत्तप है, स्पष्ट कीजिए -

- "पुर्ति पर हर एक की आवश्यकता पूर्ति के लिए काफी है पर किसी के लालप के लिए कुद बही।" महात्मा गांधी
- 'लगभग सभी लोग विपदि का सामना कर सकते हैं पर यदि निसी के परिव का परीक्षण करना है, तो उसे क्षम्भि/ अधिकार दे दो।' अवाद्म लिंकन
- 'शतुओं पर विषय पाने की अपेक्षा में अपनी इच्छाओं का दमन करने वालों को अधिक साहसी मानता हूँ।' अरस्टू  
(2013 IAS)

Ans-(a) अर्थ-

महात्मा गांधी के अनुसार प्रकृति सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम है क्योंकि प्रकृति ने संसाधनों का निर्माण इस उकार किए हैं कि पारिस्थितिकीय तन्त्र में एक संतुलन बना रहता है।

लेकिन भनुष्य अपने लोग व अधिक से अधिक धन सम्पदा अर्जित करने की इच्छा के कारण प्रकृति द्वारा उदात्त संसाधनों का अधिक से अधिक दोष छर रहा है जिससे असन्तुलन की स्थिति पैदा हो गयी है।

वर्तमान देशविकारण के पुण में उपशोभितावादी संस्कृति के फलस्पर्ध पर्यावरण के इस क्षरण को और अधिक हीष्ठ कर दिया है।

प्रासंगिकता -

- ✓ पर्यावरण संरक्षण के उपाय के लौर पर
- ✓ संसाधन उत्पन्न सीखाने की ऐरणा

- ⇒ असमानता को छुर करने के लिए
- ⇒ शहरी व ग्रामीण जीवनशैली के अन्तर को घुनतम करने के लिए
- ⇒ भूष्टायार में कृषि
- ⇒ समाजेशी विकास के लक्ष्य को पाठ्य करने के लिए

Ans. b) अर्थ-

अद्वाहम लिंकन के अनुसार विपर्ति, मानव जीवन का एक अंग है और लगभग प्रत्येक भनुष्य इसका सामना किसी व विसी रूप में अवश्य करता है।

विपरीत परिस्थितियाँ मानव जीवन की शक्ति, सहनशीलता, धैर्य व जीवन के प्रति हमारे इच्छितों की परिस्था लेती है।

व्यक्ति को सत्ता देने पर उसके भरिन का परिस्थान सम्भव हो पाता है यदि व्यक्ति भरिनवान हो तो वह सत्ता का द्रुपयोग नहीं करेगा लेकिन इसके विपरीत यदि व्यक्ति द्रुपयोग नहीं करेगा तो वह सत्ता का द्रुपयोग करेगा जो भरिन दीघपूर्ण हो हो वह सत्ता का द्रुपयोग अपने निप्पी व सम्भव हो जि वह सत्ता का उपयोग अपने निप्पी वितो की पूर्ति के लिए करें व कि सार्वजनिक टिक्का व कल्पाण के लिए।

प्रांसुणी क्रमा -

- ⇒ विपरीत परिस्थिति में धैर्यवान बने रहने की पुरेणा।
- ⇒ शक्ति का उपयोग जनकल्पाण के लिए करना।
- ⇒ मानवता की शालाई के लिए तत्पर रहना।
- ⇒ सत्ता का द्रुपयोग नहीं करना।
- ⇒ सामाजिक चाय को प्रबोध करना।

Ans. @ अर्थ-

- ⇒ अरस्टू के कथन को निहितार्थ यह है कि व्यक्ति को अपनी इच्छियों व उर्भेतियों पर विषय प्राप्त करना पाठ्य।
- ⇒ इनके अनुसार वास्तविक साहस पात्य शब्दाओं पर विषय प्राप्त करें जहाँ वरन् अपने स्थनियन्त्रण में आते हैं।
- ⇒ अर्थात् काम, क्रोध, भद्र, लोभ आदि इच्छाओं का दबाने करें व्यक्ति आत्मज्ञानी बन सकता है जो साहसी श्री होगा इसलिए युद्ध को साहसी बनाने की गति करते हैं।
- ⇒ इच्छाओं को विप्रित करने के लिए आत्मज्ञान होना धार्हिण तळ ही आव्यसयंम आयेगा और आव्यसयंम इस इच्छाओं पर विषय प्राप्त की जा सकती है।

असंगठन-

- = सामाजिक समस्याओं के विदाव के उपाय के लिए।
- = हिंसा पर नियन्त्रण
- = अव्याधार पर नियन्त्रण
- = उत्तम व धायित्वे का बोध
- = ईमानदार, सत्यनिष्ठ, निष्पक्ष व्यीवनयापन
- = साहसी बनाने की प्रेरणा।

Question: महात्मा गांधी के सात पापों की संकलनना की विवेकना कीजिए। (IAS 2016)

Ans. महात्मा गांधी के सात पाप-

- सिङ्हासन रहित राजनीति
- परिश्रम रहित धनोपार्जन
- विवेक रहित सुख

- बिना परित्रिके ज्ञान
- बिना नीतिकृति के व्यापार
- मानवता रहित विज्ञान
- वैराग्य रहित उपासना

① लिखा गया रहित राजनीति को पाप क्लास्टर गांधी जी ने यह सन्देश दिया कि रेसी राजनीति खोखली होती है और समाज व राष्ट्र में अस्तित्वार को भग्न देती है।

② परिश्रम रहित धनीपार्षन का अभिधार्य है कुछ न करते हुए कुछ पाना अर्थात् बिना किसी प्रयास के वस्तुओं और सेवाओं की प्राप्ति।

③ विवेक रहित सुख का अर्थ है बिना किसी उत्तरदायित्व के सुख की घेष्ठा करना जबकि वास्तविक सुख कुछ पाने के साथ-साथ कुछ देने में है।

④ बिना परित्रिके ज्ञान का अभिधार्य है ज्ञान के इकूपण्योग की सम्भावना बनी रहती है व्यांकि ज्ञान यदि अपोग्य व्यक्ति के पास है तो उसका उपयोग वह निष्पत्ति स्पार्थ के लिए छोड़ा जा सकता है कि ज्ञान क्ललपाण के लिए।

⑤ बिना नीतिकृति के व्यापार करने का अभिधार्य है नीतिकृति भूल्यों को अपनापि बिना व्यापार करना जिससे नीतिकृति विद्वन् समाज का निर्माण होगा।

⑥ मानवता रहित विज्ञान का आशय है यह विज्ञान के इकूपण्योग की सम्भावना छढ़ जायेगी जो कैरियर स्तर पर परमाणु व रसायनिक अस्त्रों के छप में देखा जा सकता है।

⑦ वैराग्य रहित उपासना का अर्थ है बिना शाव के भ्रमि करने वैसा वस्तुतः व्याप्ति और वैराग्य की आग ज्ञान के लिए कुछ करने की छोड़ा देता है।

Question. “बड़ी भट्टत्वाकांक्षा भवान परिव का आवावेश (भुमूल) है। जो इससे सम्पन्न है वे या तो बहुत अर्थदे अथवा बहुत बुरे कार्य कर सकते हैं। ये सब कुद उन सिद्धान्तों पर आधारित हैं जिनसे वे निर्देशित होते हैं।” नेपोलियन बोनापार्ट उदाहरण देते हुये उन शासकों का उल्लेख कीजिए जिन्होंने

- (i) समाज व देश का अद्वितीय किया हो।
- (ii) समाज व देश के विकास के लिए कार्य किया हो।

Ans. इनिया के भवान व बैठे कार्य आलस्मिक रूप से नहीं हुये हैं अपितु इसके पीछे एक बड़ी भट्टत्वाकांक्षा या भुमूल हो। इतिहास के कई उदाहरण इसके साथी हैं-

- (i) समाज व देश का अद्वितीय किया हो-

भगवान् भट्टत्वाकांक्षा निरूप सिद्धान्तों पर आधारित होती है हो वह समाज व देश के लिए विनाशकारी सिद्ध होती है इससे समाज व देश अनेक समस्याओं से घिर जाता है।

उदाहरण के लिए हिटलर और भुसोलिनी

चे क्रमशः नार्सीवाद व फार्सीवाद सिद्धान्तों के द्वारा इनिया को छिर्णीय विश्व युद्ध की ओर धौकेल दिया जिसके कारण विश्व को अपूर्णनीय छल्ली थाते उठानी पड़ी। इसी प्रकार सद्गुरु द्वैन, किम्बोग उन तानाशाहों ने अपने देश की जनता की अभिप्रष्टि की स्वतंत्रता हीन ली।

- (ii) समाज व देश के विकास के लिए कार्य किया हो-

बड़ी भट्टत्वाकांक्षा एवं उच्च सिद्धान्तों का पालन करने वाला भवान परिव समाज व देश के विकास को भवी दिशा पुदान करता है।

उदाहरण के लिए अशोक भवान जिसने धर्म सिद्धान्त का पालन कर इनिया के समक्ष जो उदाहरण

पेश किया उसका पालन आप भी देश लंब सिंह दोनों भाग  
देखा जा सकता है। इसी कार अकबर महान्, भट्टाचार्य गांधी,  
भवानीश्वरलाल मेट्रु, नेलसन बण्डेला आदि जे समाज व देश को  
वर्धी गति प्रदान की।

इस तरह हम कह सकते हैं कि बड़ी भृत्याकांडा  
तभी समाज, देश और विश्व के विकास में काम आ सकती है  
जब हम उच्च सिङ्हासन से परिपूर्ण हों।

—